ओशो सुगंधा

जनवरी 2023

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

- मृत्यु है जीवन की साथी
- ओशो की मृत्यु : एक रहस्य
- ओंकार रूपी विदेही परमगुरु
- बुद्धपुरुष की मृत्यु, नाभि और नाद

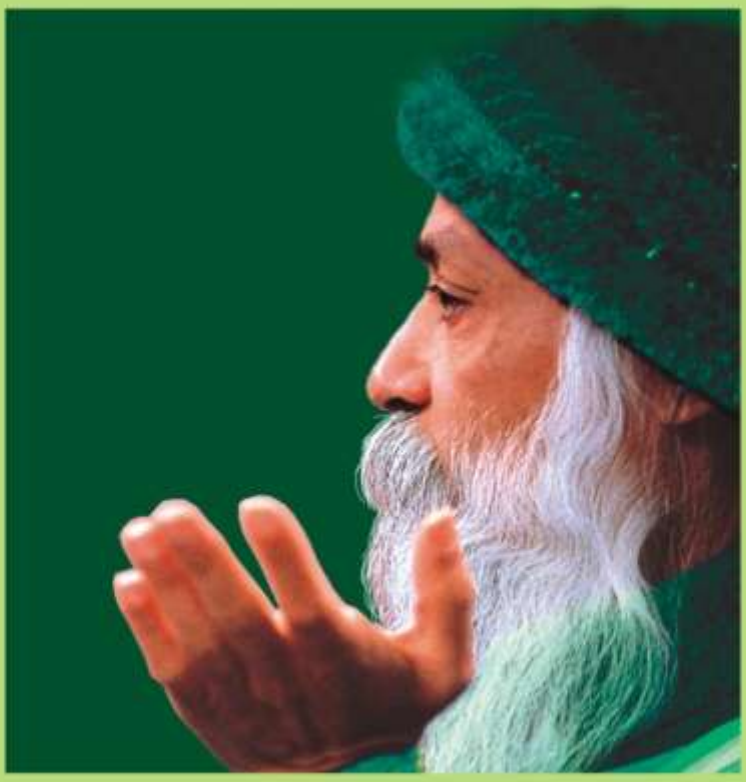

ओशो सुगंधा

वर्ष-2/अंक-13 जनवरी 2023

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

परमगुरू ओशो के चरणों में समर्पित

प्रेरणास्त्रोत
स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं मा अमृत प्रिया

संपादन एवं संकलन
मा मोक्ष संगीता

अन्य सहयोग
मस्तो बाबा

कला एवं साज सज्जा
आनंद संदेश

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंधा

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका की विशेषताएं

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दर्शाए गए चिह्न इस पत्रिका में
आपको विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके
स्पर्श मात्र से सक्रिय हो जाएंगे

ऑडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही आप संगीत का ऑडियो सुन अथवा डाउनलोड कर सकते हैं

वीडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही आप वह वीडियो देख सकते हैं

व्हाट्स ऐप

इस बटन को स्पर्श करते ही आप व्हाट्स ऐप पर सम्बंधित व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं

गुगल मैप

इस बटन को स्पर्श करते ही आपके फ़ोन पर उस जगह का गुगल मैप खुल जाएगा

पुस्तक

इस बटन को स्पर्श करते ही आप PDF में पढ़ अथवा डाउनलोड कर सकते हैं

वेब साइट

इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे उस वेब साइट पर जा सकते हैं

क्वोरा

इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे हिंदी में क्वोरा पर पढ़ सकते हैं

अनुक्रम

1. समय के साथ नया होना ही जीवन है 05
2. मृत्यु है जीवन की साथी 06
3. बुद्धपुरुष की मृत्यु, नाभि और नाद 09
4. **When I am gone, where can I go?** 12
5. **ओशो की मृत्यु : एक रहस्य** 14
6. **ओशो की मृत्यु संबंधित प्रवचनांश** 18
7. ओंकार रूपी विदेही परमगुरु 19
8. **ओम् ध्यान** 26
9. महापुरुष यानि महान स्वप्न दृष्टा 28
10. **जीवन संगीत** 31
11. **Insight into sanyas name** 32
12. सपने का त्याग 34
13. क्वोरा लिंक 35
14. म्यूजिक एलबम – **ओशो मिलन की आई बेला** 36
15. स्वस्थ रहें, मस्त रहें 37
16. **अध्यात्म के मार्गों की व्याख्या : योग, भक्ति, सांख्य** 38
17. हंस दो जरा 40
18. **ओशो सदी कैलेंडर** 41
19. आगामी कार्यक्रम 42
20. समाचार 43
21. संपर्क सूत्र 48
22. पूर्व के संस्करण 49

समय के साथ नया होना ही जीवन है

-ओशो

प्यारी चंदना,

प्रेम।

तेरा पत्र मिला है।
नये वर्ष की शुभ कामनाएं भी।
समय तो रोज नया होता है।
प्रतिपल नया है।
लेकिन आदमी पुराना ही बना रहता है।
नहीं--आदमी नया होता ही नहीं है।
समय नया होता जाता है
और आदमी पुराना होता जाता है।
यही मृत्यु है।
समय के साथ नया होना ही जीवन है।
समय और स्वयं में जरा भी फासला नहीं चाहिए।
फिर ही उसका पता चलता है
जो जीवन है--जो है।
और आश्चर्यों का आश्चर्य यह है कि
वह जीवन समय के अतीत है।
समय के साथ वर्तमान के साथ पूर्ण एकता सधते
ही चेतना समय के अतीत हो जाती है।
नये वर्ष में तेरे लिए ऐसी ही अनुभूति की कामना
करता हूं।
आर्या, सुमति को मेरे प्रणाम।
और सबको भी।

9-1-1969

परम श्रद्धेय स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी
नववर्ष का संदेश देते हुए

परम श्रद्धेय मां अमृत प्रिया जी
नववर्ष का संदेश देते हुए

मृत्यु है जीवन की साथी

-ओशो

जिसे तुम जीवन की भांति जानते हो वह अपने भीतर मृत्यु को छिपाए है। जीवन ऊपर की ही पर्त है, भीतर मृत्यु मुंह बाए खड़ी है। और अगर तुमने जीवन को सिर्फ जीवन जाना, भीतर छिपी मृत्यु को न पहचाना, तो तुम जीवन को जानने से वंचित ही रह जाओगे।

मृत्यु जीवन के विपरीत नहीं है। मृत्यु जीवन की संगी-साथिन है। वे दो नहीं हैं; वे एक ही घटना के दो छोर हैं। जीवन जिसका प्रारंभ है, मृत्यु उसी की परिसमाप्ति है। गंगोत्री और गंगासागर अलग-अलग नहीं। मूलस्रोत ही अंत भी है। जन्म के साथ ही तुमने मरना शुरू कर दिया। इसे अगर न पहचाना, तो जो सत्य है, जो जीवन का यथार्थ है, उससे तुम्हारा कोई भी संबंध न हो पाएगा। अगर तुमने जीवन को जीवन जाना, और मृत्यु को जीवन से पृथक और विपरीत जाना, तो तुम चूक गए। फिर तुम्हें बार-बार भटकना होगा। और तुम उसे भी न पहचान पाओगे जो दोनों के पार है। क्योंकि जब तुम जीवन और मृत्यु को ही न पहचान पाए तो उन दोनों के पार जो है, उसे तुम कैसे पहचान पाओगे? और वही तुम हो।

कबीर ने कहा है: मरते-मरते जग मुआ, औरस मरा न कोय। एक सयानी अपनी, फिर बहुरि न मरना होय। सारा जग मरते-मरते मर रहा है, लेकिन ठीक रूप से मरना कोई भी नहीं जानता। लेकिन कबीर एक सयानी मौत मरा, और फिर दुबारा उसे लौट कर न मरना पड़ा। जो भी ठीक से मरने का राज जान गया, वह जीने का राज भी जान गया। क्योंकि वे दो बातें नहीं हैं। और जानते ही दोनों के पार हो गया। और पार हो जाना ही मुक्ति है। पार हो जाना ही परम सत्य है।

न तो तुम जीवन हो और न तुम मृत्यु हो। तुमने अपने को जीवन माना है, इसलिए तुम्हें अपने को मृत्यु भी माननी पड़ेगी। तुमने जीवन के साथ अपना संबंध जोड़ा है तो मृत्यु के साथ संबंध कोई दूसरा क्यों जोड़ेगा? तुम्हें ही जोडना पड़ेगा। जब तक तुम जीवन को पकड़ कर आसक्त रहोगे, तब तक मृत्यु भी तुम्हारे भीतर छिपी रहेगी। जिस दिन तुम जीवन को भी फेंक दोगे कूड़ा-कर्कट की भांति, उसी दिन मृत्यु भी तुमसे अलग हो जाएगी। तभी तुम्हारी प्रतिमा निखरेगी। तभी तुम अपने पूरे निखार में, अपनी पूरी महिमा में प्रकट होओगे। उसके पहले तुम परिधि पर ही रहोगे।

मृत्यु भी परिधि है और जीवन भी। तुम दोनों से भीतर, और दोनों के पार, और दोनों का अतिक्रमण कर जाते हो। यह जो अतिक्रमण कर जाने वाला सूत्र है, इसे चाहो आत्मा कहो, चाहे परमात्मा कहो, चाहे निर्वाण कहो, मोक्ष कहो, जो तुम्हारी मर्जी हो। अलग-अलग ज्ञानियों ने अलग-अलग नाम दिए हैं; लेकिन बात एक ही कही है।

सबै सयाने एक मत।

और अगर सयानों में तुम्हें भेद दिखाई पड़े तो अपनी भूल समझना। वह भेद तुम्हारी नासमझी के कारण दिखाई पड़ता होगा। सयानों के कहने के ढंग अलग-अलग होंगे। होने ही चाहिए। सयानों के व्यक्तित्व अलग-अलग हैं। वे जो भी बोलेंगे, वह अलग-अलग होगा। उनके गीतों के शब्द कितने ही अलग हों, लेकिन उनका गीत एक ही है। और संगीत वे अलग-अलग वाद्यों पर उठा रहे होंगे, लेकिन उनका संगीत एक ही है, उनकी लयबद्धता एक ही है। जो कबीर ने कहा है वही लाओत्से कह रहा है अपने ढंग से। लाओत्से के एक-एक वचन को समझने की कोशिश करें- जीवन से ही निकल कर मृत्यु आती है। आउट ऑफ लाइफ डेथ एण्टर्स।

तो तुम ऐसा मत सोचना की मृत्यु कहीं अलग खड़ी है। ऐसा मत सोचना कि मृत्यु कोई दुर्घटना है। ऐसा मत सोचना कि मृत्यु कहीं बाहर से आती है; कोई भेजता है। तुम्हारे भीतर ही मृत्यु बड़ी हो रही है; तुम्हारे साथ ही चल रही है। अगर तुम बायां कदम हो तो मृत्यु दायां, अगर तुम दायां कदम हो तो मृत्यु बायां। वह तुम्हारा ही पहलू है। एक पैर तुम्हारा जीवन है तो दूसरा पैर तुम्हारी मौत है। वह तुम्हारे साथ ही बढ़ रही है। तुम जब भोजन कर रहे हो तब जीवन को ही गति नहीं मिल रही है, मृत्यु को भी मिल रही है। जब तुम श्वास ले रहे हो तो जीवन ही उससे शक्तिमान नहीं हो रहा है, मृत्यु भी हो रही है। तुम्हारी हर श्वास में छिपी है। भीतर आती श्वास अगर जीवन है तो बाहर जाती श्वास मृत्यु है।

इसलिए तुम ऐसा मत सोचना कि मृत्यु कहीं भविष्य में है, दूर; संत्तर-अस्सी साल बाद घटेगी। ऐसे ही टाल-टाल कर तो तुमने जीवन गंवाया है; यही सोच-सोच कर कि कभी होगी, अभी क्या जल्दी है। और मृत्यु अभी हो रही है। क्योंकि संसार इस क्षण के अतिरिक्त किसी समय को जानता ही नहीं; कोई भविष्य नहीं है। अस्तित्व के लिए वर्तमान ही एकमात्र समय है। जो भी हो रहा है अभी हो रहा है। इसी क्षण तुम पैदा भी हो रहे हो, इसी क्षण तुम मर भी रहे हो। इसी क्षण जीवन, इसी क्षण मौत। वे दो किनारे; तुम्हारी जीवन की सरिता उनके बीच इसी क्षण बह रही है। तो तुम जो भी कर रहे हो, वह दोनों के लिए ही भोजन बनेगा। तुम उठोगे तो जीवन उठा और मौत भी उठी; तुम बैठोगे तो जीवन बैठा और मौत भी बैठी।

तो पहली बात लाओत्से कहता है कि मृत्यु को तुम अपने से अलग मत समझ लेना।

सारे जगत में, सारे पुराणों में कथाएं हैं। सभी कथाएं धोखा देती हैं। धोखा यह देती हैं कि मौत कोई भेजता है। कोई यमदूत आता है भैंसे पर सवार होकर, या कि कोई यमराज भेजता है मृत्यु को तुम्हें लेने के लिए। ये सब बातें कहानियां हैं। मृत्यु उसी दिन आ गई जिस दिन तुम पैदा हुए; तुम्हारे जन्म के बीच में ही छिपी थी।

अब तो वैज्ञानिक कहते हैं कि बहुत जल्दी इस बात के उपाय हो जाएंगे कि जैसे ही बच्चा गर्भ धारण करेगा वैसे ही हम पता लगा लेंगे कि कितने दिन जिंदा रहेगा। क्योंकि वह जो पहला बीज है, उस बीज में ब्लू-प्रिंट है, उस बीज में पूरी कथा छिपी है कि यह कितने साल जीएगा- सत्तर, कि अस्सी, कि पचास, कि दस, कि पांच। ज्योतिषी सर्टिफिकेट के साथ, कि बच्चे का जन्म हुआ, तुम जाकर सर्टिफिकेट ले आ सकोगे वैज्ञानिक से कि यह कितने दिन जीएगा, कितनी इसकी उम्र होगी। मौत उसी दिन आ गई जिस दिन यह पैदा हुआ। कहीं और मौत घटने वाली नहीं है। इसलिए तुम टाल न सकोगे। इसलिए पोस्टपोन करने का कोई उपाय नहीं हैं

और तुम टालते हो। और तुम भी भलीभांति पहचानते हो इस बात को कि रोज तुम बूढ़े हो रहे हो, रोज तुम मर रहे हो। रोज तुम्हारे हाथ से जीवन-ऊर्जा छूटी जाती है; रोज तुम खाली हो रहे हो। लेकिन फिर भी तुम टालते हो। वह कहानी तुम्हें सहायता देती है कि मौत कहीं अंत में है, जल्दी क्या है। अभी और दूसरे काम कर लो।

इसीलिए तुम धर्म को भी टालते हो। क्योंकि जिसने मौत को टाला, उसने धर्म को भी टाला। जिसने मौत को आंख भरकर देखा, वह धर्म को न टाल सकेगा। क्योंकि धर्म मौत के पार जाने का विज्ञान है। तुम बीमारी ही टाल देते हो तो औषधि को टाले में क्या कठिनाई हैं?

इसीलिए तो पशुओं में कोई धर्म नहीं है, वृक्षों में कोई धर्म नहीं है। क्योंकि उन्हें मृत्यु का कोई बोध नहीं है। छोटे बच्चे पैदा होते से धार्मिक नहीं हो सकते; छोटे बच्चे पैदा होते से तो अधार्मिक होंगे ही। क्योंकि वे पौधों जैसे हैं, पशुओं जैसे हैं। उन्हें भी मौत का कोई पता नहीं। सच तो यह है कि जिस दिन बच्चे को पहली दफे मौत का पता चलता है, उसी दिन बचपन समाप्त हो गया, उसी दिन भय प्रविष्ट हो गया, उसी दिन वह पौधों और पशुओं की दुनिया का हिस्सा न रहा। अदम ईदन को बगीचे के बाहर निकाल दिया गया। अब वह बगीचे का हिस्सा नहीं है। जिस दिन बच्चे को पता चल गया कि मौत है उसी दिन वह बूढ़ा हो गया।

लेकिन फिर जिंदगी भर हम टालते हैं कि है मौत जरूर, लेकिन अभी नहीं है। अभी नहीं करके हम अपने को सांत्वना देते हैं। फिर हमें यह भी दिखाई पड़ता है: जब कोई मरता है कोई दूसरा ही मरता है; हम तो कभी मरते नहीं। कभी यह पड़ोसी मरता है, कभी वह पड़ोसी मरता है। तो मन में हम एक भ्रांति संजोए रखते हैं कि मौत सदा दूसरे की होती है, अपनी नहीं। और अभी बहुत देर है। और आदमी के मन की क्षमता इतनी नहीं है कि वह तीस, चालीस, पचास साल लंबी बात सोच सके। आदमी के मन का प्रकाश छोटे से मिट्टी के दीए का प्रकाश है, बस दो-चार फीट तक पड़ता है; इससे ज्यादा नहीं। चार कदम दिखाई पड़ते हैं बस। उतना काफी है।

इसलिए जब भी तुम किसी चीज को बहुत दूर टाल देते हो तो वह न के बराबर हो जाती है। जैसे तुमसे कहे कि तुम्हारी मृत्यु अभी होने वाली है, कोई बताए कि अभी तुम मर जाओगे घड़ी भर में, तो तुम्हारा रोआं-रोआं कंप जाएगा। लेकिन कोई कहे कि मरोगे सत्तर साल में; कुछ भी नहीं कंपता। सत्तर साल इतना लंबा फासला है कि तुम्हें करीब-करीब ऐसा लगता है कि सत्तर साल इतने दूर हैं; अनंतता मालूम होती है। कोई डर की अभी जरूरत नहीं। फिर सत्तर साल हाथ में हैं, हम कुछ उपाय भी कर सकते हैं बचने के। लेकिन अगर अभी ही मौत हो रही हो तो उपाय भी नहीं है करने का; समय भी नहीं है। तब तुम कंप जाते हो; तब तुम भयभीत हो जाते हो।

-ओशो की प्रसिद्ध पुस्तक "ताओ उपनिषद" से संकलित

बुद्धपुरुष की मृत्यु, नाभि और नाद

-ओशो

ओम्—सत्य के खोजियों की सबसे बड़ी उपलब्धि है। ऐसी अनेक घटनाएं हैं जो पूरी तरह अविश्वसनीय हैं, किंतु वे ऐतिहासिक हैं।

मारपा– एक तिब्बती रहस्यदर्शी– जब मरा, उसके निकटतम शिष्य उसके चारों ओर बैठे हुए थे...क्योंकि एक रहस्यदर्शी की मृत्यु उतनी ही महत्त्वपूर्ण होती है जितना उसका जीवन, या शायद कुछ अधिक ही। यदि तुम किसी रहस्यदर्शी की मृत्यु के समय उसके निकट हो सको तो उस समय तुम बहुत कुछ अनुभव कर सकते हो; क्योंकि उसकी संपूर्ण चेतना शरीर का त्याग कर रही है और यदि तुम सावधान और जागरूक हो तो तुम एक नई सुगंध का अनुभव कर सकते हो, एक नया प्रकाश देख सकते हो, एक नया संगीत सुन सकते हो।

मारपा जब मरा, वह एक मंदिर में रहता था। और अचानक शिष्य आश्चर्यचकित हो गए, वे अपने चारों ओर देखने लगे कि ओम का यह नाद कहां से आ रहा है। अंततः उन्होंने पाया कि यह नाद कहीं दूसरी जगह से नहीं बल्कि मारपा की देह से आ रहा है। उन लोगों ने अपने कान उसके हाथों से, पैरों से लगाकर सुना, वे भरोसा न कर सके– उसके संपूर्ण शरीर के भीतर कुछ तरंगायित था जो ओम का नाद पैदा कर रहा था। संबोधि के बाद मारपा जीवन भर इस नाद को सुनता रहा था। इस नाद को निरंतर भीतर सुनते रहने के कारण यह उसके भौतिक शरीर की कोशिकाओं तक में प्रवेश कर गया था। उसके शरीर का रेशा–रेशा एक विशिष्ट समस्वरता सीख गया था।

लेकिन ऐसा दूसरे रहस्यदर्शियों द्वारा भी अनुभव किया गया है। खासकर मृत्यु के क्षण में, जब सब कुछ अपने चरम बिंदु पर होता है, अंतर उस नाद की तरंगों को विकर्ण करने लगता है। लेकिन मनुष्य इतना अंधा और इतना अविवेकी है कि यह जानकर कि रहस्यदर्शी अपने भीतर मौन के संगीत को अनुभव करते हैं और वे इसे ओम कहते हैं, लोग ओम को मंत्र की तरह जपने लगे; यह सोच कर कि ओम के जाप से वे भी उसे सुनने में सक्षम हो जाएंगे।

इसको जपने से उस नाद को तुम कभी नहीं सुन सकोगे। जप करते समय तुम्हारा मन ही काम कर रहा है।

लेकिन इस बात को तुमसे कहने वाला संभवतः मैं पहला व्यक्ति हूं। अन्यथा सदियों से लोग ओम का जाप सिखा रहे हैं। वह एक मिथ्यानुभव पैदा करता है। और तुम मिथ्या में खो जा सकते हो और असली को कभी अनुभव नहीं कर सकोगे।

मैं तुमसे इसे जपने को नहीं कहता, बस शांत हो जाओ और इसे सुनो। जैसे तुम्हारा मन शांत और स्थिर होता है, अचानक तुम पाओगे कि एक फुसफुसाहट की तरह तुम्हारी अंतरात्मा में ओम उठ रहा है। जब यह स्वयं से पैदा होता है तो इसका गुणधर्म बिल्कुल अलग होता है। यह तुम्हें रूपांतरित कर देता है।

आधुनिक भौतिक विज्ञान कहता है कि संसार में सब कुछ विद्युत–ऊर्जा से बना है; और ध्वनि भी अन्य कुछ नहीं, विद्युत–तरंगें हैं। वैज्ञानिक बाहर से काम करते रहे हैं।

रहस्यदर्शी ठीक इसके विपरीत कहते हैं। लेकिन मैं उनमें विरोध नहीं देखता। रहस्यदर्शियों के अनुसार यह संपूर्ण अस्तित्त्व ध्वनिरहित ध्वनि– ओम – से बना है। यह विद्युत और अग्नि भी अन्य कुछ नहीं, ध्वनि का ही सघन रूप हैं।

पूरब में यह बात ज्ञात थी। ऐसे संगीतज्ञ हुए हैं जो अपने संगीत से दीपक को जला सकते थे। जैसे ही संगीत बुझे हुए दीपक के संपर्क में आता है, एकाएक लौ जल उठती है। अतीत में यह एक परीक्षण था कि कोई संगीतज्ञ जब तक अपने संगीत से प्रकाश, अग्नि, लौ नहीं उत्पन्न कर देता, वह अपरिपक्व समझा जाता था। वह सिद्ध आचार्य नहीं समझा जाता था।

भौतिकशास्त्र और रहस्यदर्शी की व्याख्याएं परस्पर विरोधी दिखाई पड़ती हैं, किंतु गहरे में संभवतः कोई स्रोत है जो विरोधाभासों और प्रतिरोधों को समाप्त कर सकता है। संभवतः ये मात्र भिन्न ढंग से व्याख्या करने का मामला है, क्योंकि रहस्यदर्शी भीतर से देख रहा है और भौतिकशास्त्री बाहर को। भौतिकशास्त्री जिसे विद्युत की तरह महसूस करता है, रहस्यदर्शी उसे संपूर्ण अस्तित्त्व के संगीत की तरह अनुभव करता है। वे दोनों भिन्न–भिन्न भाषाओं में कह रहे हैं। और अगर दोनों के बीच चुनाव करना पड़े तो मैं रहस्यदर्शी को चुनूंगा, क्योंकि वह उसे अपने केंद्र पर अनुभव कर रहा है। उसका अनुभव वस्तुओं पर किए गए प्रयोग का नहीं है। उसकी अनुभूति अपनी चेतना पर किए गए प्रयोग की है और चेतना अस्तित्त्व का नवनीत है।

ओम मणि पद्मे हुम – इस मंत्र में अनेक रहस्य छिपे हुए हैं। प्रथम शब्दहीन शब्द ओम है और अंतिम है हुम्। पहला शब्द खिलावट है और अंतिम शब्द बीज।

सूफी लोग अल्लाह के पूरे नाम का उपयोग नहीं करते। अल्लाह परमात्मा के लिए मुसलमानों का नाम है। वे अल्लाहू का उपयोग करते हैं और धीरे–धीरे वे अल्लाहू को भी हू–हू में बदल देते हैं। उन लोगों ने पाया है कि हू की ध्वनि नाभि के ठीक नीचे जीवनस्रोत पर सीधे चोट करती है। क्योंकि तुम अपने जीवन से, अपनी मां से नाभि द्वारा ही जुड़े थे। नाभि के ठीक नीचे तुम्हारा अपना जीवनस्रोत है।

कभी प्रयोग करो– जब तुम हू कहते हो तो नाभि के नीचे चोट पड़ती है। इसका हम अपने सक्रिय ध्यान में उपयोग करते हैं। यह एक सूफी खोज है, लेकिन इसका प्रयोग तिब्बती ढंग से भी किया जा सकता है।

हू के बजाय– हू कुछ कठोर मालूम पड़ता है, हुम् थोड़ा अधिक कोमल लगता है। किंतु कोमल तुम्हारी ऊर्जाओं को जगाने में अधिक समय लेगा। तिब्बत की विशिष्ट जलवायु में संभवतः कोमलतर ही उपयुक्त था। जीवनस्रोत पर चोट करने के लिए उन्हें अधिक चोट की जरूरत नहीं थी। किंतु अरब के तपते रेगिस्तान में सूफी रहस्यदर्शियों ने हू का प्रयोग करना शुरू किया।

जब मैं सक्रिय ध्यान पर काम कर रहा था तो मेरे सामने विकल्प था कि हुम् को चुनना या हू को। मैंने दोनों पर प्रयोग किए और मैंने पाया कि भारत में हू अधिक उपयुक्त है, बजाय तिब्बत के ठंडे ऊंचे प्रदेश के जहां सब कुछ भिन्न होना ही है। हुम् उनके लिए बिल्कुल ठीक है।

हुम् तुम्हारे भीतर ओम पैदा करने के लिए आघात है। यदि तुम जीवन के बीज पर चोट करते हो तो यह मिट्टी में खोने लगता है, हरी पत्तियां, अंकुर निकलने लगते हैं।

ओम और हुम्– इन दोनों के बीच में मणि पद्मे है। मैं नहीं सोचता कि कोई भी परम अनुभव को, परम सौंदर्य को मणि पद्मे से बेहतर रूप में व्यक्त करने में समर्थ हुआ हो। तुम तनिक कल्पना करो। कमल का फूल पूरब में सबसे सुंदर और सबसे बड़ा फूल है। और अगर तुम कमल के फूल पर प्रातःकालीन सूरज की धूप में मणि रख दो, तुम एक अपरिसीम सुंदर अनुभव के समक्ष हो...कमल पुष्प में मणि!

परम अनुभव के बारे में कुछ भी कहना बहुत कठिन है, लेकिन तिब्बती रहस्यदर्शियों ने सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। उसके बारे में बहुत कुछ कहा गया है, लेकिन कमल पर मणि सर्वाधिक उत्कृष्ट अभिव्यक्ति लगती है– क्योंकि यह महानतम और सर्वाधिक सुंदर अनुभूति है और उन्होंने सामान्य जगत की दो सुंदरतम वस्तुओं– कमल और मणि– को चुना है। यह उस सौंदर्य की मात्र अभिव्यक्ति है जिसे तुम अपने भीतर देखते हो।

इस ओम मणि पद्मे हुम् मंत्र में एक पूरा दर्शन समाया हुआ है। अंतिम शब्द हुम् से आरंभ करो और प्रथम शब्द स्वतः उद्भूत होगा। और जब तुम्हारा आंतरिक अस्तित्त्व मौन के नाद से भर जाएगा तब तुम प्रातःकालीन सूर्य के प्रकाश में कमल पर मणि के सुंदर अनुभव को भी देखोगे। प्रकाशित मणि! और कमल इतना कोमल, इतना स्त्रैण, इतना सुकुमार! किसी दूसरे फूल से इसकी तुलना नहीं हो सकती।

– ओम मणि पद्मे हुम्, प्रवचन 1 से अनुवादित

When I am gone, where can I go?

-Osho

BELOVED OSHO,

THE FRUIT FALLS ON THE GROUND WHEN IT IS RIPE. ONE DAY, YOU WILL LEAVE US, AND IT WILL BE IMPOSSIBLE TO HAVE ANOTHER MASTER IN YOUR PLACE.

HOW CAN ANYBODY ELSE BE THE SUBSTITUTE FOR THE MASTER OF MASTERS?

OSHO, WHEN YOU LEAVE THE PHYSICAL BODY, WILL YOUR MEDITATION TECHNIQUES HELP OUR INNER GROWTH AS THEY DO NOW?

My approach to your growth is basically to make you independent of me.

Any kind of dependence is a slavery, and the spiritual dependence is the worst slavery of all.

I have been making every effort to make you aware of your individuality, your freedom, your absolute capacity to grow without any help from anybody. Your growth is something intrinsic to your being. It does not come from outside; it is not an imposition, it is an unfolding.

All the meditation techniques that I have given to you are not dependent on me -- my presence or absence will not make any difference -- they are dependent on you. It is not my presence, but your presence that is needed for them to work.

It is not my being here but your being here, your being in the present, your being alert and aware that is going to help.

I can understand your question and its relevance. It is not irrelevant.

The whole past of man is, in different ways, a history of exploitation. And even the so-called spiritual people could not resist the temptation to exploit. Out of a hundred masters, ninety-nine percent were trying to impose the idea that, "Without me you cannot grow, no progress is possible. Give me your whole responsibility."

But the moment you give your whole responsibility to somebody, unknowingly you are also giving your whole freedom.

And naturally, all those masters had to die one day, but they have left long lines of slaves: Christians, Jews, Hindus, Mohammedans. What are these people? Why should somebody be a Christian? If you can be someone, be a Christ, never be a Christian. Are you absolutely blind to the humiliation when you call yourself a Christian, a follower of someone who died two thousand years ago?

The whole of humanity is following the dead. Is it not weird that the living should follow the dead, that the living should be dominated by the dead, that the living should depend on the dead and their promises that 'We will be coming to save you.'

None of them has come to save you. In fact, nobody can save anybody else; it goes against the foundational truth of freedom and individuality.

As far as I am concerned, I am simply making every effort to make you free from everybody -- including me -- and to just be alone on the path of searching.

This existence respects a person who dares to be alone in the seeking of truth. Slaves are not respected by existence at all. They do not deserve any respect; they don't respect themselves, how can they expect existence to be respectful towards them?

So remember, when I am gone, you are not going to lose anything. Perhaps you may gain something of which you are absolutely unaware.

Right now I am available to you only embodied, imprisoned in a certain shape and form. When I am gone, where can I go? I will be here in the winds, in the ocean; and if you have loved me, if you have trusted me, you will feel me in a thousand and one ways. In your silent moments you will suddenly feel my presence.

Once I am unembodied, my consciousness is universal. Right now you have to come to me.

Then, you will not need to seek and search for me. Wherever you are... your thirst, your love... and you will find me in your very heart, in your very heartbeat.

-OSHO, Beyond Enlightenment, Chapter #11, Date: 13 October 1986, Mumbai

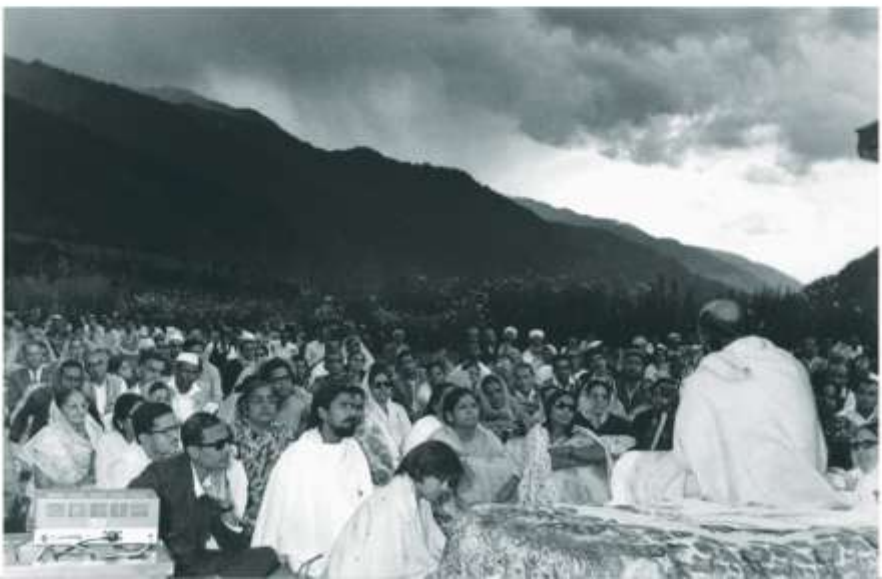

ओशो की मृत्यु : एक रहस्य

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

हम नहीं जानते कि तथ्य क्या है, किंतु ओशो का देहावसान निश्चित रूप से वैसी घटना नहीं है जैसा कि आम लोग, शिष्य या विरोधी, हितैषी अथवा शत्रु सोचते हैं। संभवतः मामला उतना रहस्यमय नहीं, जितना हम कल्पना कर पाते हैं... उससे बहुत अधिक रहस्यपूर्ण है। शायद उन्होंने स्वयं आयोजन किया हो, एक बार पुनः जन्म लेने की योजना हो... या कुछ और, हमारे लिए अकल्पनीय...!

ओशो की मृत्यु : एक रहस्य से संबंधित निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान दीजिए–

अंतिम दस महीनों के दौरान प्रकाशित हुई पुस्तकों को सदगुरु ओशो ने नए उपशीर्षक दिए। निम्नलिखित सूची में किताबों के नाम पढ़िए और आपको तुरंत स्पष्ट हो जाएगा कि वे अपने जाने की पूर्व-सूचना दे दिए थे। हम न समझ पाए तो वह हमारी चूक रही।

सदगुरु ओशो द्वारा दिए गए किताबों के उपशीर्षक

★ शिक्षा में क्रांति

सुन सको तो सुनो,

थोड़ी देर और पुकारूंगा, और चला जाऊंगा

★ पथ के प्रदीप

जला तो दिए हैं, जलाए रखना

★ क्रांति बीज

मैं तो बो चला, देखना तुम कि बीज, बीज ही ना रह जाए

★ एक ओंकार सतनाम

इधर से गुजरा था, सोचा सलाम करता चलूं

★ चल हंसा उस देस

देर हुई बहुत

★ दीया तले अंधेरा

एक और गीत गा लूं, तो चलूं

★ महावीर या महाविनाश

अब और देर नहीं, अब भी समय है

★ साधना–पथ

अब और ना रुको दिन हैं बस चार

दो आरजू में बीत गए दो इंतजारी में

★ समाधि के सप्त द्वार

कब तक खड़े रहोगे बाहर?

युग बीते, कल्प बीते और प्रतीक्षा कब तक?

★ मरौ हे जोगी मरौ

न जाने समझोगे या नहीं:

मृत्यु बन सकती है द्वार अमृत का

★ नेति–नेति

कहूं तो किससे कहूं, सुनता कौन है

★ बहुतेरे हैं घाट

मगर उतरो तो सही

★ मैं कहता आंखन देखी

अंधों की बस्ती है और रोशनी बेचता हूं

11 अप्रैल 1989 से 19 जनवरी 1990 तक, 284 दिन सदगुरु मौन में डूबे रहे। यह ठीक वही अवधि है जितने समय एक शिशु गर्भकाल में रहता है। यह वक्त महाजीवन में, पारलौकिक जीवन में प्रवेश की तैयारी का था।

'मैं मृत्यु सिखाता हूं' के प्रथम प्रवचन में 28 अक्टूबर 1969 को ओशो ने स्वयं अपनी मृत्यु के संदर्भ में कहा है, वह ध्यान देने योग्य है। सत्तर साल की जगह साठ साल ही जिएंगे, उनका यह अनुमान लगभग सही निकला–

एक अदभुत अनुभव मुझे हुआ, वह मैं कहूं। अब तक उसे कभी कहा नहीं। अचानक ख्याल आ गया तो कहता हूं। कोई बारह साल पहले, तेरह साल पहले, बहुत रातों तक एक वृक्ष के ऊपर बैठकर ध्यान करता था। ऐसा बार–बार अनुभव हुआ कि जमीन पर बैठकर ध्यान करने पर शरीर बहुत प्रबल होता है। शरीर बनता है पृथ्वी से और पृथ्वी पर बैठकर ध्यान करने से शरीर की शक्ति बहुत प्रबल होती है। वह जो हाइट्स पर, पहाड़ों पर और हिमालय पर जाने वाले योगी की चर्चा है, वह अकारण नहीं है, बहुत वैज्ञानिक है। जितनी पृथ्वी से दूरी बढ़ती है शरीर की, उतना ही शरीरतत्व का प्रभाव भीतर कम होता चला जाता है।

तो एक बड़े वृक्ष पर ऊपर बैठकर मैं ध्यान करता था रोज रात। एक दिन ध्यान में कब कितना लीन हो गया, मुझे पता नहीं; और कब शरीर वृक्ष से गिर गया, वह मुझे पता नहीं। जब नीचे गिर पड़ा शरीर, तब मैंने चौंककर देखा कि यह क्या हो गया है! मैं तो वृक्ष पर ही था और शरीर नीचे

गिर गया! कैसा हुआ अनुभव, कहना बहुत मुश्किल है। मैं तो वृक्ष पर ही बैठा था और शरीर नीचे गिरा था और मुझे दिखाई पड़ रहा था कि वह नीचे गिर गया है। सिर्फ एक रजत-रज्जु, एक सिलवर कॉर्ड नाभि से और मुझ तक जुड़ी हुई थी। एक अत्यंत चमकदार शुभ्र रेखा। कुछ भी समझ के बाहर था कि अब क्या होगा? कैसे वापस लौटूंगा?

कितनी देर यह अवस्था रही, वह भी पता नहीं। लेकिन अपूर्व अनुभव हुआ। शरीर के बाहर से पहली दफा देखा शरीर को। और शरीर उसी दिन से समाप्त हो गया। मौत उसी दिन से खतम हो गई। क्योंकि एक और देह दिखाई पड़ी जो शरीर से भिन्न है। एक और सूक्ष्म शरीर का अनुभव हुआ। कितनी देर यह रहा, कहना मुश्किल है। सुबह होते-होते दो औरतें वहां से निकलीं दूध लेकर किसी गांव से, और उन्होंने आकर पड़ा हुआ शरीर देखा। वह मैं देख रहा हूं ऊपर से कि वे करीब आकर बैठ गई हैं। कोई मर गया! और उन्होंने सिर पर हाथ रखा..और एक क्षण में जैसे तीव्र आकर्षण से मैं वापस अपने शरीर में आ गया और आंख खुल गई।

तब एक दूसरा अनुभव भी हुआ। वह दूसरा अनुभव यह हुआ कि स्त्री पुरुष के शरीर में एक कीमिया और केमिकल चेंज पैदा कर सकती है और पुरुष स्त्री के शरीर में एक केमिकल चेंज पैदा कर सकता है। यह भी ख्याल हुआ कि उस स्त्री का छूना और मेरा वापस लौट आना, यह कैसे हो गया! फिर तो बहुत अनुभव हुए इस बात के और तब मुझे समझ में आया कि हिंदुस्तान में जिन तांत्रिकों ने समाधि पर और मृत्यु पर सर्वाधिक प्रयोग किए थे, उन्होंने क्यों स्त्रियों को भी अपने साथ बांध लिया था। क्योंकि गहरी समाधि के प्रयोग में अगर शरीर के बाहर तेजस शरीर चला गया है, सूक्ष्म शरीर चला गया है, तो बिना स्त्री की सहायता के पुरुष के तेजस शरीर को वापस नहीं लौटाया जा सकता। या स्त्री का तेजस शरीर अगर बाहर चला गया है, तो बिना पुरुष की सहायता के उसे वापस नहीं लौटाया जा सकता। स्त्री और पुरुष के शरीर के मिलते ही एक विद्युत वृत्त, एक इलेक्ट्रिक सर्किल पूरा हो जाता है और वह जो बाहर निकल गई है चेतना, तीव्रता से भीतर वापस लौट आती है।

फिर तो छह महीने में कोई छह बार वह अनुभव हुआ निरंतर, और छह महीने में मुझे अनुभव हुआ कि मेरी उम्र कम से कम दस वर्ष कम हो गई। दस वर्ष कम हो गई मतलब, अगर मैं सत्तर साल जीता तो अब साठ ही साल जी सकूंगा। छह महीने में एक अजीब-अजीब से अनुभव हुए।

छाती के सारे बाल मेरे सफेद हो गए छह महीने के भीतर। मेरी समझ के बाहर हुआ कि यह क्या हो रहा है!

और तब यह भी ख्याल आया कि इस शरीर और उस शरीर के बीच के संबंध में व्याघात पड़ गया है, उन दोनों का जो तालमेल था वह टूट गया है। और तब मुझे यह भी समझ में आया कि शंकराचार्य का तैंतीस साल की उम्र में मर जाना या विवेकानंद का छत्तीस साल की उम्र में मर जाना कुछ और ही कारण रखता है। अगर ये दोनों के संबंध बहुत तीव्रता से टूट जाएं, तो जीना मुश्किल है। और तब मुझे यह भी ख्याल में आया कि रामकृष्ण का बहुत बीमारियों से घिरे रहना और रमण का कैंसर से मर जाने का भी कारण शारीरिक नहीं है, उस बीच के तालमेल का टूट जाना ही कारण है।

लोग आमतौर से कहते हैं कि योगी बहुत स्वस्थ होते हैं, लेकिन सचाई बिल्कुल उलटी है। सचाई आज तक यह है कि योगी हमेशा रुग्ण रहा है और कम उम्र में मरता रहा है। और उसका कुल कारण इतना है कि उन दोनों शरीर के बीच जो एडजेस्टमेंट चाहिए, जो तालमेल चाहिए, उसमें विघ्न पड़ जाता है। जैसे ही एक बार वह शरीर बाहर हुआ, फिर ठीक से पूरी तरह कभी भी पूरी अवस्था में भीतर प्रविष्ट नहीं हो पाता है। लेकिन उसकी कोई जरूरत भी नहीं रह जाती, उसका कोई प्रयोजन भी नहीं रह जाता, उसका कोई अर्थ भी नहीं रह जाता है।

अभिव्यक्ति

ओशो का महापरिनिर्वाण : एक सुनियोजित महाप्रयाण

पथ के प्रदीप : जला तो दिए हैं, जलाए रखना

ओशो की मृत्यु संबंधित प्रवचनांश

क्या ओशो को अपनी मृत्यु का पूर्व ज्ञान था?

मैं मृत्यु सिखाता हूं - भगवान श्री रजनीश भाग - १

मैं मृत्यु सिखाता हूं - भगवान श्री रजनीश भाग - २

मैं मृत्यु सिखाता हूं भगवान श्री रजनीश - भाग - ३

Sensational Interview of Osho's Brother Swami Shailendra Saraswati by Pradeep Aniruddha || PMC English

ओंकार रूपी विदेही परमगुरु

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न– परमगुरु ओशो ने कहा है कि शरीर से मुक्त होकर मैं पहले से भी ज्यादा तुम्हें उपलब्ध हो जाऊँगा। उनकी उपस्थिति किस भांति अनुभव होती है?

सर्वाधिक सूक्ष्म, ओंकार–संगीत के रूप में अनुभव होती है।

और यह सिर्फ ओशो की ही बात नहीं, सभी सद्गुरुओं के संबंध में सच है। जब वे देह त्याग देते हैं तो देह रूपी पिंजड़े के भीतर जो आलोकमय ओंकार रूपी चैतन्य पंक्षी बन्द था, वह मुक्त हो जाता

है शरीर की सीमा से। और तब वे सर्वव्यापी जागतिक ओंकार–नाद के साथ एकात्म हो जाते हैं। तब सद्गुरु निराकार परमात्मा हो जाते हैं।

जब देह में थे तो एक सीमा थी, एक आकार था, एक विशेष रूप था; अब वह रूप खो गया, सीमा भी विलीन हो गई। सच पूछो तो ओशो ने अपना जो नाम चुना है, वह ओशनिक एक्सपीरियेन्स यानी सागरीय अनुभव से लिया है। यानि व्यक्ति बूंद की भांति अब नहीं रहा, सागर की तरह हो गया, फैलकर विराट हो गया। बूंद की तो एक छोटी सी सीमा थी। अब वह सीमा खो गई। कोई रूप, कोई आकृति ना रही। बूंद बूंद ना रही, सागर हो गई। पूरे सागर में उस बूंद की उपस्थिति महसूस की जा सकती है। अब वह सर्वव्यापक हो गई– 'ओमनी–प्रेजेन्ट' यानी ओम की तरह प्रेजेन्ट।

पंतजलि योग सूत्र पर बोलते हुए प्रवचन नं 15, 16, 17 और 18 में स्वयं ओशो ने इस सम्बन्ध में कुछ बातें कही हैं। विशेष रूप से उन्होंने उल्लेख किया हैं कि देह छोड़ने के बाद सद्गुरु की उपस्थिति से संबंधित।

तीन बातें समझ लें। एक तो शिक्षक–विद्यार्थी का सम्बन्ध होता है। दूसरा गुरु–शिष्य का सम्बन्ध होता है। और तीसरा गुरु का सम्बन्ध गुरुओं के गुरु से होता है। इस प्रवचन का उन्होंने शीर्षक रखा है– 'दि मास्टर ऑफ दि मास्टर्स' 'गुरुओं के गुरु' या दूसरे शब्दों में कह लें परम गुरु। पंतजलि का सूत्र है कि देह त्यागने के बाद सद्गुरु गुरुओं के गुरु बन जाते हैं, वे ओंकार स्वरूप हो जाते हैं; और उनसे जुड़ने के लिए ओम का स्मरण करना चाहिए। ओम पर ध्यान दो, ओम में डूबो।

आश्चर्य की बात है, मैं इतने हजारों संन्यासी मित्रों से मिलता हूँ, और उनसे पूछता हूं कि आप ओशो की उपस्थिति किस रूप में अनुभव करने की कोशिश करते हैं? उन्हें कुछ भी पता नहीं है, इस मामले में बिल्कुल ही अन्धेरा छाया हुआ है। जबकि स्वयं ओशो ने खूब विस्तार से वर्णन किया है। मैं चाहूँगा कि सभी संन्यासी मित्र ओशो

के ये चार प्रवचन अवश्य पढ़ें– पंतजलि योग सूत्र भाग 1 के प्रवचन नंबर 15 से लेकर 18 तक। ताकि आपको पता हो कि आप जिस सद्गुरु से जुड़ने की कोशिश कर रहे हैं, अब वह कहां हैं, किस रूप में हैं, उनसे जुड़ने का अर्थ क्या है और उनसे जुड़ने की विधि क्या है?

पंतजलि ने खूब अच्छे से समझाया है कि ओम को जपो, ओम पर ध्यान दो और ओम में डूबो। क्योंकि सद्गुरु देह त्यागने के बाद अनहद–नाद हो जाते हैं। वे ओम् का प्रकाश हो जाते हैं। यह नाम आपने सुना होगा, हमारे मुल्क में बहुत कॉमन नाम है ओमप्रकाश। कभी आपने ख्याल नहीं किया होगा ओमप्रकाश का अभिप्राय क्या है– ओंकार की रोशनी। ओंकार के दो रूप मुख्य हैं– एक ध्वनिमय रूप, एक प्रकाशमय रूप। गोरखनाथ पर प्रवचन देते हुए 'मरौ हे जोगी मरौ' में ओशो समझाते हैं गोरखनाथ का यह प्यारा वचन– 'शब्द भया उजियाला।'

वह जो भीतर शब्द गूंज रहा हैं ओंकार का, जैसे वह प्रकाशित हो जाए, ऐसी अद्भुत घटना घटती है। शब्द भया उजियाला। भीतर का अनाहत शब्द दो रूपों में प्रगट होता है– स्वर व उजाले की तरह। अशरीरी सद्गुरु भी उसी आलोकित शब्द में समा जाते हैं।

कबीर ने कहा है– बूंद समानी समुंद में, सो कत हेरी जाए?

सीमित बूंद असीमित सागर हो गई। ओशनिक एक्सपीरियेन्स हुआ, अब वह ओशो हो गई। ओंकार के सागर में समाकर स्वयं सागर हो गई। अतः सद्गुरु से जुड़ने के लिए शिष्य को ओंकार के श्रवण में डूबना होगा। ओंकार की साधना करनी होगी।

बहुतेरे मित्र मुझ पर आरोप लगाते हैं कि यहाँ ध्यान शिविरों में जो सिखाया जा रहा है वह ओशो की देशना से कुछ हटकर है। नहीं, बिल्कुल भी हटकर नहीं है। शायद आपने ओशो को ठीक से सुना–पढ़ा नहीं। या फिर आपने ओशो को समझा नहीं। आप बिना जाने ही ओशो की अदृश्य उपस्थिति से जुड़ने का प्रयास कर रहे हो, बिना समझे कि ओशो ने क्या कहा है? यहाँ इन ध्यान शिविरों में जो सिखाया जा रहा है वह ठीक ओशो की मूल देशना है।

ओशो ने 'योगाः दि अल्फा एंड दि ओमेगा' के पन्द्रहवें प्रवचन में यह भी समझाया है कि जब कोई गुरु शरीर से विदा हो जाता है तब भी वह अपने शिष्यों को मदद पहुँचाने की कोशिश करता है। पहले से भी ज्यादा अच्छे से मदद कर सकता है। क्योंकि पहले तो वह सीमित था एक जगह, एक शरीर में। अब वह सर्वव्यापी हो गया। सारी दुनिया में काम कर सकता है, सब के ऊपर, एक साथ। क्योंकि वह समय और स्थान के पार चला गया है।

ओशो ने एक उदाहरण दिया है कि गुरजियफ की मृत्यु के बाद गुरजियफ की परम्परा में कोई भी संबुद्ध शिष्य ना हो पाया। आस्पेंस्की बुद्धत्व के बिल्कुल निकट था, लेकिन वह भी पूर्णरूप से ना जाग सका। वह दूसरा जन्म लेने की प्रतीक्षा में है, लेकिन वह अभी जन्म नहीं ले पाया। शायद लम्बा वक्त लगे। तब तक के लिए गुरिजयफ की श्रृंखला टूट गई। गुरिजयफ की परम्परा में कोई जीवित

गुरु नहीं है। ओशो ने कहा– इसलिए गुरिजयफ अपने सारे शिष्यों को मेरे पास भेज रहा है। उन शिष्यों को खुद नहीं पता होगा कि वे कैसे मेरे पास आए?उनसे पूछोगे तो वे बहुत ही स्थूल कारण बताएंगे।

समझो कोई आदमी जर्मनी से आया। उससे पूछो कि कैसे आए? तो वह कहेगा कि मैं एक बुक–स्टोर में गया था। किताबें देख रहा था। एक किताब पर छपे फोटोग्राफ को देखकर मैं आकर्षित हुआ। वह किताब मैंने उठा ली, खरीद ली। घर आकर उसको पढ़ा। वह भगवान श्री रजनीश की पुस्तक थी। पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैंने पता लगाया कि यह व्यक्ति कहां रहते हैं? इस प्रकार मैं पूना आश्रम चला आया। यहां ध्यान–साधना की, खूब आनन्द आया। फिर भाव उठा संन्यास लेने का और मैं ओशो का संन्यासी हो गया हूं।

...ऐसी कोई कहानी वह व्यक्ति सुनाएगा। ओशो कहते हैं कि असली कहानी कुछ और है। वह व्यक्ति गुरजियफ का शिष्य था। गुरु के देह–त्यागने तक वह अपनी मंजिल को, बुद्धत्व को उपलब्ध नहीं कर सका। गुरजियफ उसकी मदद कर रहा है। वह व्यक्ति भी नहीं जानता कि कौन उसको उस बुक–स्टोर में ले गया और उस किताब पर ही उसकी नजर क्यों पड़ी? और उस चित्र ने आकर्षित क्यों किया? गुरजियफ उसके अन्दर से प्रेरणा जगा रहा है। सूक्ष्म जगत से निर्देश भेज रहा है। वह व्यक्ति नहीं जानता लेकिन उसे कोई मार्ग–दर्शन दे रहा है। गुरजियफ यह प्रयास कर रहा है कि इस वक्त धरती पर जो बद्धपुरुष हैं उनके पास अपने शिष्यों को भेज दे। इस तरह गुरजियफ ने अपने शिष्यों को ओशो के पास भेजा। वे गुरजियफ की प्रेरणा से ही आए और यह कोई नई घटना नहीं है, ऐसा सदा–सदा होता रहा है।

यदि उस परम्परा में उस सद्गुरु के शिष्य एनलाइटैंन्ड नहीं हो पाते, अगर वह धारा आगे नहीं बहती, टूट जाती है, जैसा की महावीर के बाद जैनों की धारा टूट गई। चौबीसवें तीर्थंकर के बाद फिर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ, महावीर जिसको सन्देश दे सकें, जिसके माध्यम से काम कर सकें। सिक्ख गुरुओं में दस गुरुओं के बाद धारा टूट गई। ग्यारहवां कोई मौजूद नहीं था जो प्रवाह को आगे बढ़ा सके। सभी परम्पराएं एक ना एक दिन टूट जाती हैं। गुरजियफ के तुरंत बाद ही कोई अगला व्यक्ति मौजूद नहीं था; दूसरा तीर्थंकर भी नहीं था। जैनियों के तो चौबीस तीर्थंकर हुए, सिक्खों के तो दस गुरु हुए तब धारा टूटी। गुरजियफ ने जो काम किया, वह एकदम से अधूरा छूट गया। गुरजियफ अपने शिष्यों को ओशो के पास जाने का इशारा किया। इसके बाद गुरजियफ की जिम्मेवारी समाप्त हो जाती है। यह भी स्मरणीय है। गुरजियफ ने अपना वह काम कर दिया जो शेष बचा था, उसने अपना वचन सूक्ष्म–लोक में पहुँच कर भी निभाया। लेकिन अब शिष्य की जिम्मेवारी है कि वह क्या करता है? हो सकता हैं कि वह ओशो के पास पहुँचे और फिर भी संन्यस्त ना हो। उसका अहंकार बीच में आ जाए। सोचे कि मैं तो गुरजियफ का प्रेमी हूँ, किसी अन्य का शिष्य कैसे बन जाऊँ? उसका अहंकार अगर दीवाल

बन जाएगा तो फिर बात ना बनेगी। लेकिन तब गुरजियफ की जिम्मेवारी समाप्त हो गई। अब गुरजियफ इस व्यक्ति के लिए रिसपौन्सिबल नहीं है। अब यह स्वयं अपना उत्तरदायित्व संभाले।

सभी सदगरू इस प्रकार से मदद पहुँचाते हैं। उनकी उपस्थिति ओंकार स्वरूप होती है– यह सूक्ष्म बात समझें। स्थूल बात की पहले चर्चा हो गई– उत्सवरूपी, आनन्दरूपी और प्रेमरूपी मौजूदगी। सूक्ष्मतर बात हुई सुगन्धमय, खुमारी रूपी, निर्भार–चैतन्यरूपी मौजूदगी। अति–सूक्ष्म बात पंतजलि ने कही कि देह त्यागने के बाद सद्गुरु प्रणव–स्वरूप हो जाते हैं। ओशो होने का यही अर्थ है। सीमित बूंद ना रहे, असीम, अनंत, अरूप, निराकार, विराट सागर हो गए। स्वयं परमात्मा ओम–स्वरूप है; उसके साथ वे भी एकात्म हो गए। उस 'एक ओंकार सतनाम' में डूब गए, विलीन हो गए।

उपरोक्त प्रवचन में एक और अदभुत बात ओशो ने समझाई कि कोई भी बुद्धपुरुष नया धर्म शुरू करना नहीं चाहता। लेकिन मजबूरी की स्थिति पैदा हो जाती है। पुराने धर्म मानने वाले लोग उसे स्वीकार नहीं करते। जीसस क्राइस्ट कोई नया धर्म, ईसाई धर्म शुरू करना नहीं चाहते थे। वे स्वयं यहूदी जन्मे थे। यहूदी की भांति जीए और मरे। उनके मन में ऐसी कोई भावना न थी कि नया धर्म शुरू किया जाए। क्योंकि वे जो कुछ भी कह रहे थे, पुराने यहूदी धर्मगुरुओं की आज्ञा से ही कह रहे थे। सूक्ष्म लोक से उन्हें पुराने यहूदी पैगम्बरों से निर्देश मिल रहे थे। लेकिन संदेश समयानुसार बदल जाते हैं। युग बदलता है, लोगों की समस्याएं बदल जाती हैं, लोगों का मनोविज्ञान बदलता है। भिन्न–भिन्न देश व काल के अनुसार व्यक्तियों व परिस्थितियों को देखकर नए समाधान देने पड़ते हैं। निश्चित रूप से जीसस कुछ ऐसी बातें कह रहे थे जो पुराने यहूदी पैगम्बरों ने नहीं कहीं। लेकिन वे ही पैगम्बर जीसस से कहलवा रहे थे कुछ नई बातें। क्योंकि जीसस का समय आते–आते बात बहुत बदल गई।

हजरत मूसा जब हुए थे, तब खूंखार और जंगली किस्म के लोग थे, बहुत बर्बर, आदिम। उस समय ईश्वर की जो धारणा थी बड़ी ईर्ष्यालु और हिंसक किस्म की धारणा थी। पुरानी बाइबिल कहती है कि परमात्मा तुम्हारा चाचा नहीं लगता। ईंट का जवाब पत्थर से देगा। तुम एक आँख फोड़ोगे किसी की वह तुम्हारी दोनों आँखें फोड़ देगा। अनन्त काल तक नरक में सड़ाएगा। अन्तहीन तड़फाएगा। परमात्मा तुम्हारा चाचा नहीं है कोई... ऐसा था पुरानी बाइबिल का ईश्वर, शैतान जैसा ज्यादा।

और जीसस कहने लगे कि परमात्मा प्रेम है। गॉड इज लव। परमात्मा करुणावान है, अगर तुम प्रायश्चित करो, वह तुम्हें क्षमा कर देगा। यह तो बात बिल्कुल विपरीत हो गई। लेकिन मूसा जिन लोगों से बात कर रहे थे वे केवल हिंसा की भाषा समझ सकते थे। वे बड़े खूंखार, जंगली, असंस्कृत किस्म के लोग थे। जीसस का समय आते–आते थोड़ी सभ्यता विकसित हुई। लोग जरा प्रेमपूर्ण हुए, थोड़ी चेतना का विकास हुआ। तब इनको डराने की जरूरत न रही। इनको प्रेम से समझाया जा सकता है कि परमात्मा करुणावान है। कोई बात नहीं... तुमसे भूलचूक हो गई, ठीक; तुम क्षमा मांग लो। वह क्षमा कर देगा। लेकिन यहूदियों को लगा कि ईसा उनके ग्रन्थ के खिलाफ बोल रहे हैं।

ओशो ने समझाया है कि माना ईसा धर्मग्रन्थ के तो खिलाफ बोल रहे हैं लेकिन मूसा और अन्य पैगम्बरों की आज्ञा से ही बोल रहे हैं। वे सूक्ष्म लोक से जो निर्देश दे रहे हैं, जीसस उन्हीं का पालन कर रहे हैं; कोई नई बात अपनी तरफ से नहीं कह रहे हैं। लेकिन जो पण्डित हैं, पुरोहित हैं, यहूदी धर्म के रबाई हैं, वे कैसे मानेंगे? वे कहेंगे कि बताओ किस किताब में ऐसा कहा है कि प्रभु प्रेमपूर्ण व क्षमाशील है? किस शास्त्र में लिखा है?

शास्त्र में तो कहीं नहीं लिखा। कोई प्रमाण नहीं है जीसस के पास। सिद्ध नहीं कर सकते, लेकिन वह जो कह रहे हैं यहूदी पैगम्बरों के मार्ग निर्देशन में ही कह रहे हैं। मजबूरी में जब यहूदी उन्हें स्वीकार नहीं करते तो एक नए धर्म की रचना होती है, ईसाई धर्म दुनिया में आता है। लेकिन यह लाचारी की बात है। जीसस ने कभी ऐसा नहीं चाहा। कोई सद्गुरु नहीं चाहता कि नए धर्म की शुरूआत हो। लेकिन मजबूरी में करनी पड़ती है।

जरा सोचो ओशो जैन परिवार में पैदा हुए और वे कहने लगें कि मैं पच्चीसवाँ तीर्थंकर हूँ तो क्या जैन इसे स्वीकार कर पाएंगे?कतई नहीं, वे भूल जाएंगे कि 'अहिंसा परमो धर्मः' इत्यादि के सिद्धांत। तलवारें–बंदूकें निकल आएंगी, हत्या ही कर देंगे वे। यह स्वीकार ना कर सकेंगे कि कोई पच्चीसवां तीर्थंकर हो सकता है। वे तो यह भी नहीं स्वीकारते कि इस पंचम काल में कोई व्यक्ति चौथे गुणस्थान तक जा सकता हैं। यह सम्भव नहीं, बुद्धत्व तो बहुत दूर की बात है। महावीर ने बताये हैं चौदह गुणस्थान, साधना के 14 पड़ाव। बुद्धत्व तो बहुत दूर की बात है, अन्त में आता है। जैन तो कहते हैं चौथे पड़ाव तक भी कोई नहीं जा सकता इस पंचम काल में; फिर कोई

व्यक्ति तीर्थंकर कैसे हो सकता है? कोई भी धर्म स्वीकार करने को राजी नहीं होता नए बुद्धपुरुष को। तब उस मजबूरी की स्थिति में एक नए धर्म की शुरूआत होती है, एक नई धारा जोड़नी पड़ती है। यह बिल्कुल लाचारी की अवस्था है।

तो स्मरण रखें कि विदेही सद्गुरु की उपस्थिति ओंकार–रूपी होती है, हम समाधि में डूबकर उनसे जुड़ते हैं। वे नाद–नूर स्वरूप हैं, प्रकाशमय संगीत हैं। यहां जो सिखाया जा रहा है, वह सद्गुरु की उस अलौकिक सूक्ष्म उपस्थिति से जुड़ने का मार्ग है। सभी सद्गुरु उस एक परमात्मा में ही समा जाते हैं। वहां सारी बूंदें अलग–थलग नहीं रहतीं। ऐसा नहीं हैं कि महावीर की बूंद अलग है, बुद्ध की बूंद अलग है, ओशो की बूंद अलग है। अब बूंदें, बूंदें ना रहीं, सब सागर में समा गईं और सागर ही हो गईं।

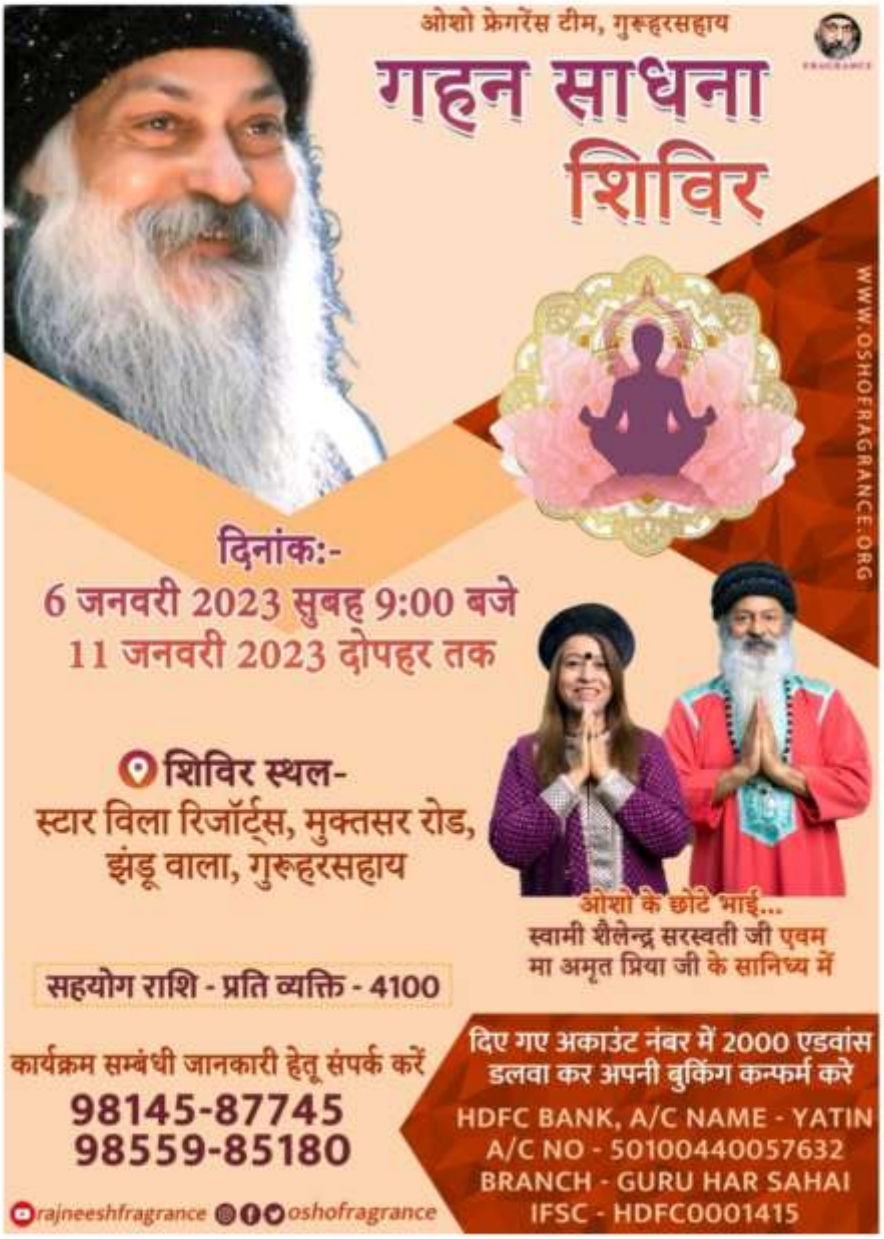

ओम्

-ओशो

शिव ने कहाः ओम् जैसी किसी ध्वनि का धीमे-धीमे गुंजार करो। जैसे-जैसे ध्वनि पूर्णध्वनि में प्रवेश करती है वैसे-वैसे साधक भी

"ओम जैसी किसी ध्वनि का धीमे-धीमे गुंजार करो।" उदाहरण के लिए ओम् को लो। यह आधारभूत ध्वनियों में से एक है। अ उ और म-ये तीन ध्वनियां ओम् में सम्मिलित हैं। ये तीनों बुनियादी ध्वनियां हैं। अन्य सभी ध्वनियां इनसे ही निष्पन्न, इनसे ही बनी और इनका ही मिश्रण हैं। ये तीनों बुनियादी हैं जैसे भौतिकी के लिए इलेक्ट्रोन, न्यूट्रान और पाजीट्रान बुनियादी हैं। इस बात को गहराई से समझना होगा।...

ध्वनि का उच्चारण एक सूक्ष्म विज्ञान है पहले तुम्हें ओम् का उच्चारण जोर से बाहर-बाहर करना है। दूसरे भी इसे सुन सकेंगे। जोर से उच्चार शुरू करना अच्छा है। क्यों? क्योंकि जब तुम जोर से उच्चार करते हो तो तुम भी उसे साफ-साफ सुनते हो। जब भी तुम कुछ कहते हो तो दूसरों से कहते हो; वह तुम्हारी आदत बन गई है। जब भी तुम बात करते हो तो दूसरों से करते हो। और तुम स्वयं को बोलते हुए तभी सुनते हो जब तुम दूसरों से बात करते होते हो। इसलिए एक स्वाभाविक आदत से आरंभ करना अच्छा है।

ओम् ध्वनि का उच्चार करो, और फिर धीरे-धीरे उस ध्वनि के साथ लयबद्ध अनुभव करो। जब ओम् का उच्चार करो तो उससे आपूरित हो जाओ, भर जाओ। और सब कुछ भूल जाओ। ओम् ही बन जाओ, ध्वनि ही बन जाओ। और

ध्वनि ही बन जाना बहुत आसान है क्योंकि ध्वनि तुम्हारे शरीर में, तुम्हारे मन में, तुम्हारे पूरे स्नायु संस्थान में गूंजने लगती है। ओम् की अनुगूंज को अनुभव करो। ओम् का उच्चार करो और अनुभव करो कि तुम्हारा पूरा शरीर उससे भर गया, शरीर का प्रत्येक कोश उससे गूंज उठा है।

उच्चार करना लयबद्ध होना भी है। ध्वनि के साथ लयबद्ध होओ; ध्वनि ही बन जाओ।

और तब तुम अपने और ध्वनि के बीच गहरी लयबद्धता अनुभव करोगे, तब तुममें उसके लिए गहरा अनुराग पैदा होगा। यह ओम् की ध्वनि इतनी ही सुंदर और संगीतमय है। जितना ही तुम उसका उच्चार करोगे उतने ही तुम उसकी सूक्ष्म मिठास से भर जाओगे। ऐसी ध्वनियां हैं जो बहुत तीखी और कठोर हैं। ओम् एक बहुत मीठी ध्वनि है और यह शुद्धतम है। इसका उच्चार करो और इससे आपूरित हो जाओ।

जब तुम ओम् की ध्वनि के साथ लयबद्ध अनुभव करने लगो, तब तुम इसका जोर से उच्चार करना बंद कर सकते हो। अब ओंठ बंद कर लो और ओम् का उच्चार भीतर ही करो, लेकिन पहले भीतर जोर से उच्चार करो, ताकि ध्वनि तुम्हारे पूरे शरीर में फैल जाए, उसके प्रत्येक हिस्से को, एक-एक कोशिका को छूए। तुम इससे अधिक प्राणवान, अधिक जीवंत हुआ अनुभव करोगे। तुम स्वयं में एक नवजीवन प्रवेश करता हुआ अनुभव करोगे।

तुम्हारा शरीर एक वाद्य की तरह है। उसे लयबद्धता की जरूरत है और जब लयबद्धता खंडित होती है, तो तुम अड़चन में पडते हो। यही कारण है कि जब तुम संगीत सुनते हो, तो तुम्हें अच्छा लगता है? संगीत और क्या है सिवाय लयबद्ध सुर-ताल के?

जब तुम्हारे आसपास संगीत होता है तो तुम इतना सुख-चौन क्यों अनुभव करते हो? और शोरगुल और अराजकता के बीच तुम्हें बेचौनी क्यों लगती है ?कारण है कि तुम स्वयं गहरे रूप से संगीतमय हो। तुम एक वाद्य यंत्र हो और यह यंत्र प्रतिध्वनि करता है।

अपने भीतर ओम् का उच्चार करो और तुम अनुभव करोगे कि तुम्हारा पूरा शरीर उसके साथ नृत्य करने लगा है। तब तुम्हें महसूस होगा कि तुम्हारा पूरा शरीर उसमें नहा रहा है; उसका पोर-पोर इस स्नान से शुद्ध हो रहा है। लेकिन जैसे-जैसे इसकी प्रतीति प्रगाढ़ हो, जैसे-जैसे यह ध्वनि ज्यादा से ज्यादा तुम्हारे भीतर प्रवेश करे वैसे-वैसे उच्चार को धीमा करते जाओ। क्योंकि ध्वनि जितनी धीमी होगी, उतनी ही वह गहराई प्राप्त करेगी। यह होमियोपैथी की खुराक जैसी है; जितनी छोटी खुराक उतनी ही गहरी उसकी पैठ होती है। गहरे जाने के लिए तुम्हें सूक्ष्म से सूक्ष्मतर हो कर जाना होगा।

– ध्यानयोगः प्रथम और अंतिम मुक्ति

महापुरुष यानि महान स्वप्न दृष्टा

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

प्रश्न– सपनों के मनोविज्ञान के संदर्भ में कृपया समझाएं– देह त्यागने के पूर्व ओशो का यह वचन कि मैं अपना स्वप्न तुम्हें सौंपता हूं। क्या है उनका सपना, और कब साकार होगा? क्या बुद्धपुरुष भी सपना देखते हैं?

सपनों–सपनों में बड़े अंतर हैं। पहले उन मनोवैज्ञानिक भेदों को समझ लें। इंसान और पशु–पक्षी, सभी स्वप्न देखते हैं– सोयी अवस्था में, और जागृत अवस्था में भी। किन्तु सचाई यह है कि हम स्वप्नों में कुछ भी नहीं देखते हैं क्योंकि देखा तो आँखों से जाता है जो स्वप्नावस्था में बंद होती हैं। तथापि हमें लगता है कि हम सपने में देख रहे होते हैं। वस्तुतः स्वप्नावस्था में हमारे मस्तिष्क का वही भाग देख रहा होता है जो आँखों द्वारा देखे जाते समय उपयोग में आता है। यह भी निश्चित है कि मस्तिष्क की अधिकाँश गतिविधियों में हमारी स्मृति भी सक्रिय होती है। स्वप्नावस्था में यह स्मृति उन दृश्यों के संयोगों को ही प्रस्तुत करती है जो हम कभी देख चुके होते हैं, अथवा जिनकी हमने कभी कल्पना की होती है, किन्तु अनियमित और अक्रमित रूप में। अनियमित, अव्यवस्थित और प्रतीकात्मक होने के कारण ही स्वप्न यथार्थ से परे प्रतीत होते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने दिन के सपनों पर बड़ी शोध की है। जब हम जागृत अवस्था में अपने कल्पना लोक में निमग्न रहते हैं तब भी हम आँखों के माध्यम से देखी जा रही वस्तुओं के अतिरिक्त भी बहुत कुछ देख रहे होते हैं। इस प्रकार हम देखने की क्रिया दो तरह से कर रहे होते हैं– आँखों से तथा मस्तिष्क से। किन्तु हमारे अनुभव हमें बताते हैं कि जब हम आँखों से देखने की क्रिया पर पूरी तरह केन्द्रित करते हैं, उस समय हमारी मस्तिष्क की देखने की क्रिया शिथिल हो जाती है और जब हम अपने कल्पनाओं के माध्यम से दिवा–स्वप्नों में लिप्त होते हैं तब हमारी आँखों से देखने की क्रिया क्षीण हो जाती है।

उपरोक्त दोनों प्रकार की देखने की क्रियाओं में मस्तिष्क का एक ही भाग उपयोग में आता है जो एक समय एक ही प्रकार से देखने में लिप्त हो सकता है।

वर्तमान क्षण में घट रही घटना के प्रति सजगता, कल्पना-लोक से बाहर ले आती है। सद्गुरु ओशो का इतना जोर 'अभी और यहीं' पर इसी कारण से है। मानसिक मायावी संसार से मुक्त होने का, यथार्थ से जुड़ने का सुगमतम उपाय यही है।

आँखों के माध्यम से देखना भी दो प्रकार का होता है- वह जो हमें स्वतः दिखाई पड़ता है, और वह जो हम विशेष ध्यान से देखते हैं। स्वतः दिखाई पड़ने वाली वस्तुओं में हमारा मस्तिष्क लिप्त नहीं होता इसलिए यह हमारी स्मृति में भी संचित नहीं होता। जिसे हम ध्यान से देखते हैं वह हमारी स्मृति में अंकित व संचित होता है और भविष्य में उपयोग में भी आता है।

अब कार्य-कुशलता को समझें। बिना ध्यान दिए स्वतः दिखाई पड़ने वाला दृश्य भी दो प्रकार का होता है- एक वह जिससे हम कोई सम्बन्ध नहीं रखते, और दूसरा वह जो हमारी स्मृति में पूर्व-समाहित होता है किन्तु ध्यान न दिए जाने के कारण नवीन रूप में स्मृति में प्रवेश नहीं करता। इस दूसरे प्रकार के देखने में हमारा अवचेतन मन सक्रिय होता है और हमारा मार्गदर्शन करता रहता है। जब हम कोई ऐसा कार्य करते हैं जिसके हम अभ्यस्त होते हैं तो हमें उस क्रिया पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती, तब हमारा अवचेतन मन हमारे शरीर का संचालन कर रहा होता है। ऐसी अवस्था में हम अपने चेतन मन को अन्य किसी विषय पर केन्द्रित कर सकते हैं। इसी का नाम कुशलता है। उदाहरण के लिए ड्राईविंग के वक्त गीत सुनना, गाना, बात करना, फोन पर संवाद आदि संभव हैं। नौसिखिया ड्राईवर ऐसा नहीं कर सकता। बैंक में काम करने वाला क्लर्क या कैशियर नोट गिनते हुए अन्य गतिविधियों में भी संलग्न रहा आता है। गिनती में भूल नहीं होती। वह कार्य अवचेतन मन के सुपुर्द छोड़ दिया गया है।

फिलहाल वैज्ञानिकों में मतभेद है कि स्वप्नावस्था में दृश्य तरंग मस्तिष्क के किस अंग से आरम्भ होती है- दृष्टि क्षेत्र से अथवा स्मृति से? मान्यता है कि यह आँख से होकर मस्तिष्क में न जाकर मस्तिष्क में ही उठती है। उनका मानना है कि व्यक्ति स्वप्न देखता है तब उसकी बंद आँखों में पुतली की तीव्र गति होती है। इस अवस्था को आर.ई.एम. निद्रा कहा जाता है- रेपिड आई मूवमेंट। इससे साबित होता है कि तरंग स्मृति क्षेत्र से आरम्भ होकर आँखों तक आती है।

कल्पना लोक में विचरना एवं दिवास्वप्न देखना एक ही क्रिया के दो नाम हैं। व्यतीत काल की स्मृतियों में निमग्न रहना यदा-कदा सुखानुभूति देता है। रात्रि के स्वप्न प्रायः भूतकाल की स्मृतियों पर आधारित होते हैं इसलिए ये भी प्रायः निरर्थक माने जाते हैं। किंतु प्रकृति ने यह इंतजाम किया है तो जीवन में इसका कोई विशेष महत्त्व भी होगा। सुखद स्मृति या कल्पना तनाव से छुटकारा दिलाकर थोड़ी देर के लिए शिथिल कर देती है। दिन भर में 20-25 बार हर व्यक्ति सम्मोहन जैसी तंद्रावस्था से गुजरता है। अगर ऐसा न हो तो जिंदगी की चिंताएं, परेशानियां, कष्टप्रद घटनाओं का बोझ विक्षिप्त कर देगा। दिवास्वप्न में कभी-कभार शेखचिल्ली बन जाने का भी सकारात्मक सम्मोहक असर पड़ता है, आशा, उमंग, ऊर्जा का उत्थान होता है। कुछ सालों पहले तक रात के सपनों को नींद में बाधक समझा जाता था, लेकिन अब प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है कि वे व्यवधान नहीं, सहयोगी हैं।

आपने पूछा है कि क्या बुद्धपुरुष भी सपना देखते हैं? इस प्रकार के नहीं, जैसे अभी वर्णन किए गए। क्योंकि शांत, जाग्रत, दमनरहित व्यक्ति को किसी तनाव से छुटकारा पाने की आवश्यकता नहीं रहती।

शांत व्यक्ति के सपने दूसरा अर्थ रखते हैं। संपूर्ण मानवता के उज्जवल भविष्य के लिए वही दिवास्वप्न महत्त्वपूर्ण होते हैं जो भविष्य के बारे में स्वस्थ, शांत मन के साथ देखे जाते हैं। ऐसे स्वप्नदृष्टा ही विश्व के मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। प्रगति सदैव व्यावहारिक क्रियाओं से होती है और प्रत्येक व्यावहारिक क्रिया के पूर्व उसका भाव दिवास्वप्न में ही उदित होता है। अतः प्रत्येक प्रगति का मूल स्रोत एक दिवास्वप्न होता है, यहां तक कि अधिकांश वैज्ञानिक आविष्कारों का भी।

हम जिन्हें महापुरुष कहते हैं, वे सामान्य मनुष्यों से ज्यादा महान स्वप्नदर्शी होते हैं। न केवल ऊंची परिकल्पना करते हैं, बल्कि उसे साकार करने हेतु श्रम भी करते हैं। ओशो ने नए मनुष्य 'झोरबा दि बुद्धा' का सपना देखा, वह सपना इतना विराट है कि मूर्तरूप लेते-लेते सदियां बीत जाएंगी। देह से विदा लेने के पूर्व उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि मै अपना स्वप्न तुम्हें सौंपता हूं। उनके स्वप्न का यह तात्पर्य है।

जीवन संगीत

ध्यान साधना पर प्रवचन

जो वीणा से संगीत के पैदा होने का नियम है, वही जीवन-वीणा से संगीत पैदा होने का नियम भी है। जीवन-वीणा की भी एक ऐसी अवस्था है, जब न तो उत्तेजना इस तरफ होती है, न उस तरफ। न खिंचाव इस तरफ होता है, न उस तरफ। और तार मध्य में होते हैं। तब न दुख होता है, न सुख होता है। क्योंकि सुख एक खिंचाव है, दुख एक खिंचाव है। और तार जीवन के मध्य में होते हैं--सुख और दुख दोनों के पार होते हैं। वहीं वह जाना जाता है जो आत्मा है, जो जीवन है, जो आनंद है।

आत्मा तो निश्चित ही दोनों के अतीत है। और जब तक हम दोनों के अतीत आंख को नहीं ले जाते, तब तक आत्मा का हमें कोई अनुभव नहीं होगा।

-ओशो

पुस्तक के कुछ मुख्य विषय-बिंदु:

क्या आप दूसरों की आंखों में अपनी परछाई देख कर जीते हैं?

क्या आप सपनों में जीते हैं?

हमारे सुख के सारे उपाय कहीं दुख को भुलाने के मार्ग ही तो नहीं हैं?

प्रेम से ज्यादा पवित्र और क्या है?

क्या आप भीतर से अमीर हैं?

जीवन का अर्थ क्या है?

विषय सूची

प्रवचन 1: आत्म-स्वतंत्रता का बोध

प्रवचन 2: खोजें मत, ठहरें

प्रवचन 3: विचार-क्रांति

प्रवचन 4. स्वप्न से जागरण की ओर

प्रवचन 5. दुख के प्रति होश की साधना

प्रवचन 6. समस्त के प्रति प्रेम ही प्रार्थना है

प्रवचन 7. विश्वास: सबसे बड़ी बाधा

प्रवचन 8. प्रार्थना का रहस्य

प्रवचन 9: क्रांति: विस्फोट, ध्यान: विकास

प्रवचन 10: नये का आमंत्रण

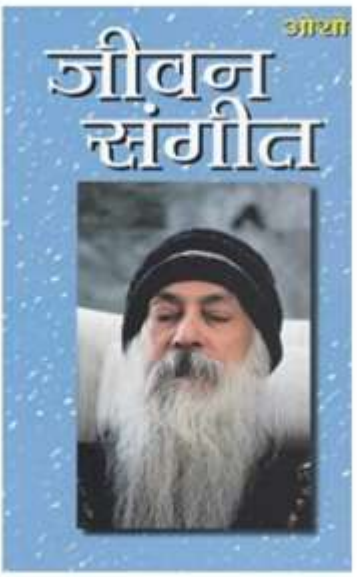

Insight into Sannyas Names

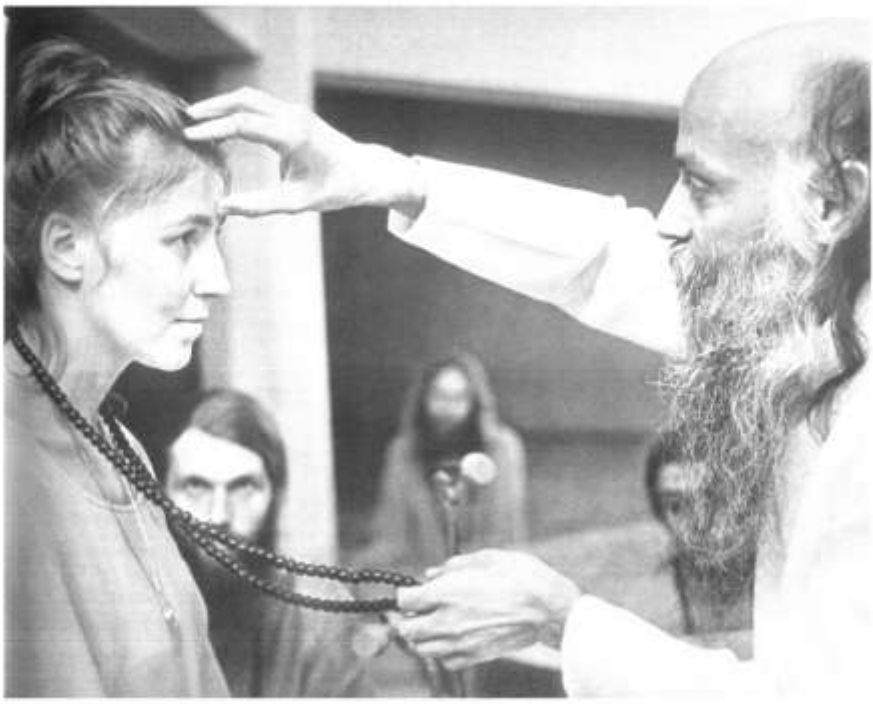

Deva means divine and mradula means softness -- divine softness. And I give this name to you for a certain purpose, so that it becomes a constant remembrance. Be soft.

The soft always overcomes the hard. The soft is alive, the hard is dead. The soft is flower-like, the hard is rock-like. The hard looks powerful but is impotent. The soft looks fragile but it is alive. Whatsoever is alive is always fragile, and the higher the quality of life, the more fragile it is. So the deeper you go, the softer you become, or the softer you become, the deeper you go. The innermost core is absolutely soft.

That is the whole teaching of Lao Tzu, the teaching of Tao: be soft, be like water; don't be like a rock. The water falls on the rock. Nobody can imagine that finally the water is going to win. It is impossible to believe that the water is going to win. The rock seems to be so strong, so aggressive, and the water seems to be so passive. How is the water going to win over the rock? But in due course the rock simply disappears. By and by the soft goes on penetrating the hard.

The hard disappears like sand. All the sand in the ocean is nothing but rocks of the past... defeated rocks, defeated hardness. It takes time for the soft to win but eventually it always wins. The hard is the male element, the soft is the female element. The female looks very very fragile; the male looks very strong -- but finally the woman overcomes the man, finally she conquers. Of course her way of conquering is not like conquering at all. She surrenders. That is the watercourse way.

She surrenders, and through surrender, she wins. She accepts the defeat with deep gratitude and love, not as defeat at all -- and that is her victory.

So let it be a continuous remembrance. Whenever you start feeling that you are becoming hard, immediately relax and become soft, whatsoever the consequence. Even if you are defeated and momentarily you see that this is going to be a loss, let it be a loss, but become soft -- in the long run, softness always wins.

And remember that man and woman is not just a biological and sexual differentiation. It is a differentiation of ultimate energies. So never be a man. And this has to be understood -- that a woman is not a woman for twenty-four hours, and a man is not a man for twenty-four hours. There are soft moments in a man's life when he is more feminine than manly. There are hard moments in a woman's life when she is more male than female. So it is a shifting emphasis. One moment you are a man, another moment you are a woman. One moment you are flower-like, another moment you become rock-like. One moment you are a waterfall, and another moment you are just a hard rock blocking the path.

So whenever you remember, relax and become feminine again. Let it become a constant reference. Again go on falling back to the feminine -- and through it will come your liberation. So, softness is going to be your sadhana.

- A rose is a rose is a rose - 17

सपने का त्याग

इस स्तंभ में प्रत्येक माह एक कहानी शेयर करेंगे जो हर उम्र वाले बच्चों, युवाओं और बूढ़ों को प्रेरणा देगी

चीन में एक बड़ी प्राचीन कथा है कि एक सम्राट का एक ही बेटा था। वह बेटा मरण–शय्या पर पड़ा था। चिकित्सकों ने कह दिया हार कर कि हम कुछ कर न सकेंगे; बचेगा नहीं, बचना असंभव है। बीमारी ऐसी थी कि कोई इलाज नहीं था। दिन दो दिन की बात थी, कभी भी मर जाएगा। तो बाप रात भर जाग कर बैठा रहा। विदा देने की बात ही थी। आंख से आंसू बहते रहे, बैठा रहा। कोई तीन बजे करीब रात को झपकी लग गई बाप को बैठे–बैठे ही। झपकी लगी तो एक सपना देखा कि एक बहुत बड़ा साम्राज्य है, जिसका वह मालिक है। उसके बारह बेटे हैं––बड़े सुंदर, युवा, कुशल, बुद्धिमान, महारथी, योद्धा! उन जैसा कोई व्यक्ति नहीं संसार में। खूब धन का अंबार है! कोई सीमा नहीं! वह चक्रवर्ती है। सारे जगत पर उसका साम्राज्य है! ऐसा सपना देखता था, तभी बेटा मर गया। पत्नी दहाड़ मार कर रो उठी। उसकी आंख खुली। चौंका एकदम। किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। क्योंकि अभी–अभी एक दूसरा राज्य था, बारह बेटे थे, बड़ा धन था––वह सब चला गया; और इधर यह बेटा मर गया! लेकिन वह ठगा–सा रह गया। उसकी पत्नी ने समझा कि कहीं दिमाग तो खराब नहीं हो गया, क्योंकि बेटे से उसका बड़ा लगाव था। एक आंसू नहीं आ रहा आंख में। बेटा जिंदा था तो रोता था उसके लिए, अब बेटा मर गया तो रो नहीं रहा बाप। पत्नी ने उसे हिलाया और कहा, तुम्हें कुछ हो तो नहीं गया?रोते क्यों नहीं?

उसने कहा, 'किस–किस के लिए रोओ?बारह अभी थे, वे मर गए। बड़ा साम्राज्य था, वह चला गया। उनके लिए रोऊं कि इसके लिए रोऊं? अब मैं सोच रहा हूं कि किस–किस के लिए रोऊं। जैसे बारह गए, वैसे तेरह गए।'

बात समाप्त हो गई, उसने कहा। वह भी एक सपना था, यह भी एक सपना है। क्योंकि जब उस सपने को देख रहा था तो इस बेटे को बिल्कुल भूल गया था। ये राज्य, तू सब भूल गए थे। अब वह सपना टूट गया तो तुम याद आ गए हो। आज रात फिर सो जाऊंगा, फिर तुम भूल जाओगे। तो जो आता–जाता है, अभी है अभी नहीं, अब दोनों ही गए। अब मैं सपने से जागा। अब किसी सपने में न मरुंगा। हो गया बहुत, समय आ गया। फल पक गया, गिरने का वक्त है!

अपने गुरु अष्टावक्र से राजा जनक कहते हैं, 'आश्चर्य कि इस शरीर सहित विश्व को किस कुशलता से त्याग कर, मैं संन्यस्त हो गया हूं। आपने यह किस कुशलता से कर दिया! यह कैसा उपदेश दिया!

त्याग घट गया! इंच भर भी हिले नहीं; जहां हैं वहीं हैं, उसी राजमहल में। जहां अष्टावक्र को ले आए थे निमंत्रण दे कर, बिठाया था सिंहासन पर––वहीं बैठे हैं अष्टावक्र के सामने। कहीं कुछ गए नहीं, राज्य चल रहा है, धन–वैभव है, द्वार पर द्वारपाल खड़े हैं, नौकर–सेवक पंखा झलते होंगे। सब कुछ ठीक वैसा का वैसा है, तिजोड़ी अपनी जगह है। धन अपनी जगह है। लेकिन जनक कहते हैं, 'आश्चर्य, त्याग घट गया!'

त्याग अंतर का है। त्याग भीतर का है। त्याग बोध का है।

और किस कुशलता से यह बात घट गई कि पत्ता न हिला और क्रांति हो गई; कि जरा–सा घाव न बना और सर्जरी पूरी हो गई! किस कुशलता से! कैसा तुम्हारा उपदेश! अब मैं परमात्मा को देखता हूं, संसार दिखाई ही नहीं पड़ रहा है। सारी दृष्टि रूपांतरित हो गई।

यह अत्यंत मूल्यवान सूत्र है: तुम जहां हो वहीं रहते, तुम जैसे हो वैसे ही रहते––क्रांति घट सकती है। कोई हिमालय भाग जाने की जरूरत नहीं है। संन्यास पलायन नहीं है, भगोड़ापन नहीं है। पत्नी है, बच्चे हैं, घर–द्वार है––सब वैसा ही रहेगा। किसी को कानों–कान खबर भी न होगी––और क्रांति घट जाएगी। यह भीतर की बात है। तुम्हीं चकित हो जाओगे कि यह हुआ क्या? अब पत्नी अपनी नहीं मालूम होगी, अब बेटा अपना नहीं मालूम होगा, मकान अपना नहीं मालूम होगा। अब भी तुम रहोगे, अब अतिथि की तरह रहोगे। सराय हो गई; घर वही है। सब वही है। करोगे कामय उठोगे, बैठोगे; दुकान–दफ्तर जाओगे; श्रम करोगे––पर अब कोई चिंता नहीं पकड़ती। एक बार यह बात दिखाई पड़ जाए कि यहां सब खेल है, बड़ा नाटक है, तो क्रांति घट जाती है।

–अष्टावक्रः महागीता–7

प्रश्नोतर

हिंदी में क्वोरा पर पढ़ने के लिए संबंधित लिंक पर क्लिक कीजिए

Q क्या ओशो का मतलब किसी ऐसे परमात्मा से है, जो ऊपर बैठा सब चला रहा है?

Q ओशो के इस वचन का क्या तात्पर्य है कि जीवन डायलेक्टिक्स है,
एवं विपरीत के अनुभव से समृद्ध होता है?

Q यदि परमात्मा सदा आनंदमग्न है तो क्या इस जीवन को उसकी एक लीला समझा जाये?

Q 'पूर्ण मौन ही एकमात्र प्रार्थना है' ओशो के इस वक्तव्य का क्या अर्थ है?

Q क्या आप सरल भाषा में समझा सकते हैं कि परमात्मा यानी क्या?

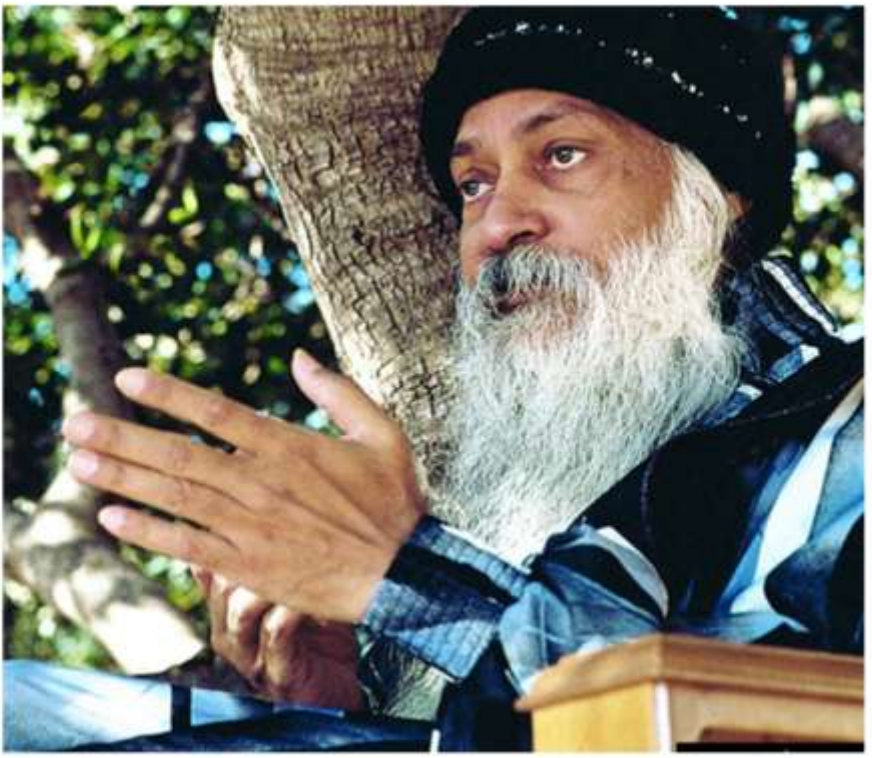

ओशो मिलन की आई बेला

11 दिसंबर 2022 की नवीन प्रस्तुति

उपरोक्त गीतों में से ओशो मिलन की आई बेला, बरस गए नैना एवं हे मेरे सद्गुरु स्वागतम् 11 दिसंबर 2022 के ओशो जन्मोत्सव जो कि श्री रजनीश ध्यान मंदिर में मनाया गया उसकी जान बन गए थे। उस उत्सव की लिंक निम्नलिखित है दो भागों में।

जन्मोत्सव –1
3 मिनिट बाद से देखिए

जन्मोत्सव –2

तुम्हारा सजदा करूं

जीवन दायक औषधिय सुझाव

-स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

वायरल निमोनिया क्या होता है और इसके लक्षण क्या हैं?

वाइरस–जनित निमोनिया वाइरस द्वारा उत्पन्न एक प्रकार का निमोनिया है। निमोनिया के दो प्रमुख कारणों में से एक वाइरस होते हैं, जबकि दूसरा कारण जीवाणु हैं; इसके कम सामान्य कारणों में कवक और परजीवी शामिल हैं। बच्चों में निमोनिया का मुख्य कारण वाइरस होते हैं, जबकि वयस्कों में जीवाणु अधिक आम कारण होते हैं।

चिन्ह और लक्षण–

वाइरस–जनित निमोनिया के लक्षणों में ज्वर, बिना बलगम वाली खांसी, नाक का बहना और प्रणालीगत लक्षण (उदा. पेशियों का दर्द, सिरदर्द) शामिल हैं। विभिन्न प्रकार के विषाणु भिन्न प्रकार के लक्षण के कारण हैं।

कारण–

इनफ्लुएंजा वाइरस ए और बी

श्वसन–तंत्रीय सिनसाइशियल वाइरस (आरएसवी)

मानवीय पैराइनफ्लुएंजा वाइरस (बच्चों में)

एडीनोवाइरस (फौजी रंगरूटों में)

मेटान्यूमोवाइरस

गंभीर तीव्र श्वसन रोगसमूह वाइरस (सार्स वाइरस)

हर्पिस सिम्प्लेक्स वाइरस (एचएसवी (HSV)

वैरिसेला–जॉस्टर वाइरस (वीजेडवी (VZV)

साइटोमिगेलोवाइरस (सीएमवी (CMV))

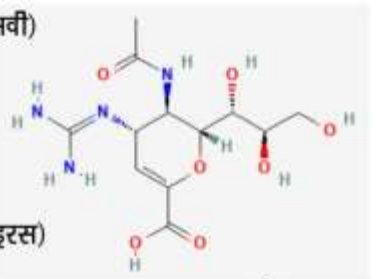

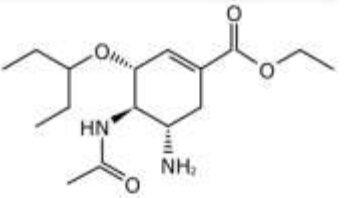

इलाज–

वाइरस–जन्य निमोनिया के उन मामलों में, जहां इन्फ्लुएंजा ए या बी को रोग का कारक समझा जाता है, लक्षणों के शुरू होने के 48 घंटों के भीतर आने वाले रोगियों को ओसेल्टामिविर या जानामिविर के द्वारा उपचार से लाभ हो सकता है। श्वसनतंत्रीय सिनसाइशियल वाइरस (आरएसवी) का उपचार रिबाविरिन से किया जा सकता है। हर्पिस सिम्लेक्स वाइरस और वेरिसेला–जॉस्टर वाइरस के संक्रमणों का इलाज आम तौर पर एसाइक्लोविर से किया जाता है, जबकि गैनसाइक्लोविर का प्रयोग साइटोमिगेलोवाइरस के उपचार के लिए किया जाता है। सार्स कोरोनावाइरस, एडीनोवाइरस, हैंटावाइरस, पैराइन्फ्लुएंजा या एच1एन1 वाइरस के द्वारा हुए निमोनिया के लिए कोई ज्ञात प्रभावशाली उपचार उपलब्ध नहीं है

(मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से)

अध्यात्म के मार्गों की व्याख्या : योग, भक्ति, सांख्य।

–मा अमृत प्रिया

अध्यात्म की मुख्यतः तीन विधियां है, तीन मार्ग है। एक मार्ग – योग का मार्ग, प्रयास का मार्ग है। दूसरा मार्ग भक्ति का मार्ग, प्रसाद का मार्ग है और तीसरा मार्ग सांख्य का है जो कहता है – सत्य मौजूद ही है, कुछ करना नहीं है, बस होना है।

एक बार की बात है, जो बादल पानी गिराते हैं उन बादलों को एक ऐसा आदेश आया कि 10 साल तक तुम्हारी छुट्टी है तुमको बारिश नहीं करना है। तो सब बादल आपस में चर्चा कर रहे थे कि हमारी 10 साल की छुट्टी है चलो अब आराम करेंगे, अब क्या करना है कोई काम ही नहीं है। किसानों ने भी सुन लिया, किसानों को खबर लग गई। लेकिन सब किसान बोले हम भी आराम करेंगे। क्यों फिर मेहनत करें? क्यों सब खेत जोते और काम करें? जब बारिश ही नहीं होनी है, चलो हम भी आराम से बैठेंगे।

लेकिन एक हरिया नाम का किसान था, उसने भी सुनी थी यह बात लेकिन वह हर रोज अपना हल लेकर जाता था, बख्खर लेकर जाता था और पूरा काम करता था खेत में सुबह से लेकर शाम तक। किसानों ने बोला क्या पागल हो तुम, आराम से बैठो किस काम आएगी तुम्हारी यह मेहनत? बादल भी सुन रहे थे उस बात को। हरिया ने जवाब दिया मैं 10 साल यदि बैठा रहूंगा तो भूल जाऊंगा कैसे हल चलाता हूं, कैसे बख्खर चलाता हूं। तब तक तो मैं काम ही भूल जाऊंगा। ताकि मैं भूल ना जाऊं इसलिए यह काम मैं रोज करता हूं। बादलों ने जब यह बात सुनी तो बादलों ने आपस में चर्चा की हरिया ऐसा बोल रहा है, कहीं हमारे साथ भी ऐसा ना हो 10 साल काम ना करें और बरसना भूल ही जाए। तो उन सबने निर्णय किया हमें भी तो लगे रहना चाहिए।

फिर उस साल खूब बारिश हो गई। जैसे ही बारिश हुई हरिया का खेत खूब लहलहाया। बाकी खेत तैयार ही नहीं थे। ना निदाई हुई थी ना गुडाई हुई थी। कुछ तैयारी ही नहीं थी तो वहां कुछ फसल नहीं आई लेकिन हरिया के खेत में खूब फसल आई। इसने प्रयास भी किया और उसे प्रसाद भी मिला। अगर हम प्रयास ही ना करें तो प्रसाद के हकदार नहीं बनते।

अर्थात, अध्यात्म के मार्ग पर हम प्रयासरत रहें। भगवान शिव का एक नाम है त्रिलोचन। त्रिलोचन यानी तीन लोचक यानी तीन नेत्र हैं जिसके। हमारे पास भी है तीसरा नेत्र लेकिन फर्क यह है कि उनका तीसरा नेत्र खुला हुआ है। वहां ऊर्जा मौजूद है उनकी, हमारी नहीं है। हमारी दोनों आंखों के नीचे नीचे ही है ऊर्जा। तो प्रयास क्या करना है? प्रयास करना है हमें तीसरे नेत्र तक ऊर्जा जाए क्योंकि तीसरे नेत्र से ही सत्य का दर्शन होता है, परमात्मा का दर्शन, परमात्मा का अनुभव होता है।

तीसरे नेत्र से ही अद्वैत का अनुभव, उस एक का अनुभव होगा। एक है ना वह उसका अनुभव एक आंख से ही होता है, तीसरी आंख जिसका नाम है। जब तक हम दो आंखों से अनुभव कर रहे हैं, देख रहे हैं तो द्वैत ही देखेंगे, संसार ही देखेंगे। परमात्मा देखना है तो तीसरे नेत्र पर आना ही होगा। प्रयास हमें बस इतना करना है तीसरे नेत्र तक ऊर्जा को लाना है। बस वहां से बरसात शुरू हो जाती है, वहां से प्रसाद शुरू हो जाता है।

प्रयास हमारा तीसरे नेत्र तक आने का है उसके नीचे जो विशुद्ध चक्र है वहां हमारी ऊर्जा अटकी-अटकी है। नाम विशुद्ध चक्र है लेकिन हमारा अशुद्ध चक्र है यह, विशुद्ध नहीं है अभी। क्यों ? क्योंकि यहां पर सारी अशुद्धियां मौजूद हैं, सारे विचारों का दमन। यहीं से वाणी संचालित होती है। वाणी क्या है ? हमने विचारों को बोल दिया। भगवान महावीर का एक वचन है कि वाणी और विचार के संबंध में। विचार जो है अव्यक्त वाणी है, अन- एक्सप्रेस्ड जिसे प्रकट नहीं किया, बोला नहीं, वह वाणी विचार है। और वाणी- व्यक्त विचार है, जिस विचार को हमने एक्सप्रेस कर दिया। इसी विशुद्ध चक्र पर मौजूद है सारी अशुद्धियां।

भगवान शिव को नीलकंठ कहते हैं, उनका कंठ नीला हो गया जब विषपान किया उन्होंने। हम सभी के भीतर वह विष भरा हुआ है और जिस दिन इस विष से हम बाहर आते हैं तब यह चक्र विशुद्ध होता है और यहां से फिर ऊर्जा का उर्ध्वगमन तीसरे नेत्र पर जब होता है तो अध्यात्म की शुरुआत होती है। तब हम योग्य हुए। हमने अपना खेत तैयार कर लिया है बारिश के लिए। फसल आएगी परमात्मा का वृक्ष लहलहा उठेगा।

सार फिर से कहुं - यहां तक आना है हमें तीसरे नेत्र तक। भांति-भांति की विधियां करते हैं हम कभी मंडल ध्यान करते हैं, कभी शिवनेत्र करते हैं, कभी हम त्राटक करते हैं, कभी गौरीशंकर करते हैं, कभी कभी श्वास को तीसरे नेत्र पर केन्द्रित करते है। किसी तरह से तीसरे नेत्र के नीचे से अशुद्धि खत्म हो और हमारी ऊर्जा मुक्त हो। सारा अटकाव विशुद्ध चक्र पर है। वहां से मुक्त हो तो फिर तीसरे नेत्र का द्वार खुल जाए, तो रास्ता क्लियर हो जाए, परमात्मा के द्वार खुल जाते हैं।

हंस दो जरा...!

एक बिहारी औरत ने एक पंजाबन से पूछा – आप अपने बच्चों की सलामती के लिए 'छठ' नहीं रखते क्या?
पंजाबन ने कहा – ना बेबे। हम तो 'लठ' रखते हैं।

केमिस्ट गुस्से से कस्टमर को कहता है – आगे से डिप्रेशन की दवा लेनी हो तो डॉक्टर का पर्चा साथ लाना। हर बार मैरिज सर्टिफिकेट लेकर चले आते हो।

पति पत्नी में काफी समय से मनमुटाव था। अनबन चल रही थी।
वे कोर्ट गये।
जज से तलाक लेने हेतु अपना आवेदन दिया।
जज ने पूछा :-
तुम्हारे तीन बच्चे है।
इनका बटवारा किस प्रकार किया जावे।
पति पत्नी के बीच में काफी बहस हुई और वे एक अंतिम नतीजे पर पहुचें।
उन्होंने जज से कहा :-
हम अगले वर्ष आते है एक और बच्चे के साथ।
चुटकुला यहाँ खत्म नहीं हुआ।
नौ माह बाद उनके यहाँ ...
जुड़वाँ बच्चों ने जन्म लिया।

एक महिला ने एक दिन अपने पति का मोबाईल चेक किया तो उसमें कुछ नंबर कुछ अलग ही ढंग से सेव किए हुए थे जैसे –
आंखो का इलाज
होठों का इलाज
दिल का इलाज
पत्नी ने गुस्से में अपना नंबर डायल किया नाम आया –
ला–इलाज

विदेशों में शादी –
इनविटेशन कार्ड – 200
आने वाले – 190
गिफ्ट – 185
और भारत में शादी –
इनविटेशन कार्ड – 300
आने वाले – 450
गिफ्ट – 250
चम्मच चोरी – 60,
डोंगा – 10,
कुर्सी चोरी – 5,
प्लेट – 50
और रिश्तेदारों का मुंह फूला वो अलग

ओशो-सदी (1931&2030) कैलेन्डर

लाल फरवरी–28 हरी फर–29			
काले माह–31 दिन के			
नीले माह–30 दिन के			
ओ	1948	1976	2004
शो	1949	1977	2005
	1950	1978	2006
स	1951	1979	2007
दी	1952	1980	2008
	1953	1981	2009
कै	1954	1982	2010
लैं	1955	1983	2011
ड	1956	1984	2012
र	1957	1985	2013
	1958	1986	2014
1931	1959	1987	2015
1932	1960	1988	2016
1933	1961	1989	2017
1934	1962	1990	2018
1935	1963	1991	2019
1936	1964	1992	2020
1937	1965	1993	2021
1938	1966	1994	2022
1939	1967	1995	2023
1940	1968	1996	2024
1941	1969	1997	2025
1942	1970	1998	2026
1943	1971	1999	2027
1944	1972	2000	2028
1945	1973	2001	2029
1946	1974	2002	2030
1947	1975	2003	

Jan	Feb				Jan	Feb
Jul	Aug	May		Dec	Oct	Mar
Apr			Jun	Sep		Nov
ज	जी	श	शो	र	नी	ओ
नी	ओ	जी	र	ज	श	शो
श	शो	ओ	ज	नी	जी	र
जी	र	शो	नी	श	ओ	ज
शो	नी	ज	जी	ओ	र	श
र	श	नी	ओ	शो	ज	जी
ज	जी	श	शो	र	नी	ओ
नी	ओ	जी	र	ज	श	शो
जी	र	शो	नी	श	ओ	ज
ओ	ज	र	श	जी	शो	नी
शो	नी	ज	जी	ओ	र	श
र	श	नी	ओ	शो	ज	जी
नी	ओ	जी	र	ज	श	शो
श	शो	ओ	ज	नी	जी	र
जी	र	शो	नी	श	ओ	ज
ओ	ज	र	श	जी	शो	नी
र	श	नी	ओ	शो	ज	जी
ज	जी	श	शो	र	नी	ओ
नी	ओ	जी	र	ज	श	शो
श	शो	ओ	ज	नी	जी	र
ओ	ज	र	श	जी	शो	नी
शो	नी	ज	जी	ओ	र	श
र	श	नी	ओ	शो	ज	जी
ज	जी	श	शो	र	नी	ओ
श	शो	ओ	ज	नी	जी	र
जी	र	शो	नी	श	ओ	ज
ओ	ज	र	श	जी	शो	नी
शो	नी	ज	जी	ओ	र	श

आप जो वर्ष और माह जानना चाहते हैं, उनकी लाइनों को मिलाने वाले खंड को देखिए।

(केवल पीले हाइलाइटेड लीप-वर्षों के लिए पीली जनवरी एवं फरवरी देखिए)

उस खंड में परमगुरु ओशो के नाम का जो अक्षर है, नीचे उसी अक्षर वाले कैलेन्डर को पढ़िए।

	ओ					शो					र					ज					नी					श					जी				
Mon	1	8	15	22	29		7	14	21	28		6	13	20	27		5	12	19	26		4	11	18	25	31	3	10	17	24	30	2	9	16	23
Tue	2	9	16	23	30	1	8	15	22	29		7	14	21	28		6	13	20	27		5	12	19	26		4	11	18	25	31	3	10	17	24
Wed	3	10	17	24	31	2	9	16	23	30	1	8	15	22	29		7	14	21	28		6	13	20	27		5	12	19	26		4	11	18	25
Thu	4	11	18	25		3	10	17	24	31	2	9	16	23	30	1	8	15	22	29		7	14	21	28		6	13	20	27		5	12	19	26
Fri	5	12	19	26		4	11	18	25		3	10	17	24	31	2	9	16	23	30	1	8	15	22	29		7	14	21	28		6	13	20	27
Sat	6	13	20	27		5	12	19	26		4	11	18	25		3	10	17	24	31	2	9	16	23	30	1	8	15	22	29		7	14	21	28
Sun	7	14	21	28		6	13	20	27		5	12	19	26		4	11	18	25		3	10	17	24	31	2	9	16	23	30	1	8	15	22	29

ध्यान साधना शिविर कार्यक्रम

सूचनाः ऑनलाइन कार्यक्रम अब शनिवार से शुक्रवार

OSHO FRAGRANCE
Program Schedule

Date	Program	Place	Contact
7-13 Jan.	Gehan Sadhana Shivir	online	Osho Fragrance Number
18 Jan	Satsang	Jaipur, Rajasthan	
19 -22 jan.	Osho Panch Mahavrat	Osho Dhyan Mandir, Benar Road, Near Khora bisal, Chatarpura, Jaipur, Rajasthan	8302371162 7339852998
21-27 Jan.	Osho Loving Awareness Retreat	online	Osho Fragrance Number
4-10 Feb.	Divya Alok Sadhana Shivir	online	Osho Fragrance Number
14-18 Feb.	Osho Shiv Sutra Sadhana Shivir	Mechi Nagar Municipality7 Jhapa Nepal	+977 9852687502 +977 9842634691
18-24 Feb.	Budham Sharnam Gachhami	online	Osho Fragrance Number
20-24 Feb.	Budham Sharnam Gachhami	Stone Age Resort Sangkhola Singtom gangtok, Sikkim	8250521088 9800846363 967950753
4-10 Mar.	Surat Sabad Yog Sadhana Shivir	online	osho Fragrance Numbers
13-16 Mar.	Geeta Dhyan Yagya (Adhyay-16)	Osho Pyramid Mota, Surat Guj.	9374718325 9327799399

Osho Fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442, 9466661255, 9890341020, 8889709895

ओशो जन्मोत्सव की झलकियां

ओशो जन्मदिवस का भव्य उत्सव "श्री रजनीश ध्यान मंदिर,"सोनीपत में मनाया गया।

800 से अधिक साधकों ने इसमें भाग लिया और गुरुवर स्वामी शैलेंद्र सरस्वती और मा अमृत प्रिया के सानिध्य में ध्यान में डूबे और उत्सव मनाया।

कुंडलिनी और शक्तिपात ध्यान के दौरान सभी ने भीतर गहराई का अनुभव किया। स्वामी जी और मां जी के लाइव गीतों से साधक मंत्रमुग्ध हो गए और ओशो की ऊर्जा को महसूस किया।

पिछले चौबीस घंटे में, विश्व भर से इस ऑनलाइन ध्यानोत्सव में भाग लेने वालों की संख्या 8200 से अधिक पहुंच चुकी है। कुंडलिनी ध्यान में 2200 और शक्तिपात ध्यान व उत्सव में 6000 से अधिक मित्र अभी तक इस उत्सव का आनंद ले चुके है।

देश विदेश के अनेक ध्यान केंद्रों में बहुतेरे मित्रों ने ऑनलाइन सामूहिक शक्तिपात प्रयोग में डुबकी लगाई। हम इस उत्सव की कुछ झलकियाँ आपके साथ साझा कर रहे हैं।

जय ओशो

Ulhasnagar

Punjab

Majholi

Burhanpur

Raipur

Nagpur

Kolkatta

Hisar

. छत्तीसगढ में 17 से 25 दिसंबर के दौरान स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती चांपा के ओशो मधुबन आश्रम में ताओ साधना शिविर एवं जीने की कला साधना शिविर लेने पहुंचे। इस पूरे समय के लिये उन्हें राजकीय अतिथि घोषित किया गया। स्वागत, इंटरव्यू और दोनो साधना शिविर की झलकियां। तदपश्चात, 24 दिसंबर से मटरा में कुंडलिनी साधना आयोजित शिविरार्थीयों से 25 तारीख मिलकर, प्रश्नों के समाधान देकर फिर रवाना हुए दिल्ली के लिये।

HAPPENING TODAY

खबर ,विज्ञापन , इंटरव्यू , डॉक्यूमेंट्री के लिए संपर्क करें - मो. 8975950362

16-12-2022, रायपुर , महाराष्ट्र

छग में आध्यात्मिक जागरण के लिए ओशो के भाई स्वामी शैलेन्द्र जी पधारेंगे

शासन ने राजकीय अतिथि घोषित किया

ओशो ने चीन के ताओवादी संतों पर लगभग 425 घंटों में 266 प्रवचन दिए हैं।

ओशो के भाई स्वामी शैलेंद्र होंगे राजकीय अतिथि

Meeting with
Matra Sadhaks

अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र

Osho fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895

Youtube page - Rajneesh Fragrance

Facebook page - Rajneesh Fragrance

Instagram - Osho Fragrance

Twitter - Rajneesh Fragrance

oMeditate App -
Osho Fragrance's Mobile App•••

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on monogram/Logo

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.

Download Osho Hindi & English Books from the link -

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंधा के पिछले अंक...

ओशो सुगंध मासिक ई-पत्रिका जो पढ़ी, देखी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें समाधि में डूबने, आनंद व भाव-विभोर से भरपूर प्रवचनो और भजनों के ऑडियो-वीडियो लिंक्स दिए गए हैं।

नियमित रुप से ई-पत्रिका प्राप्त करने हेतू, अपने मोबाइल नं. को पंजीकृत करवाने के लिए सामने दिए गए चिह्न को दबाएं।

पत्रिका को खोलने के लिए पुस्तक वाले चिह्न को दबाएं।

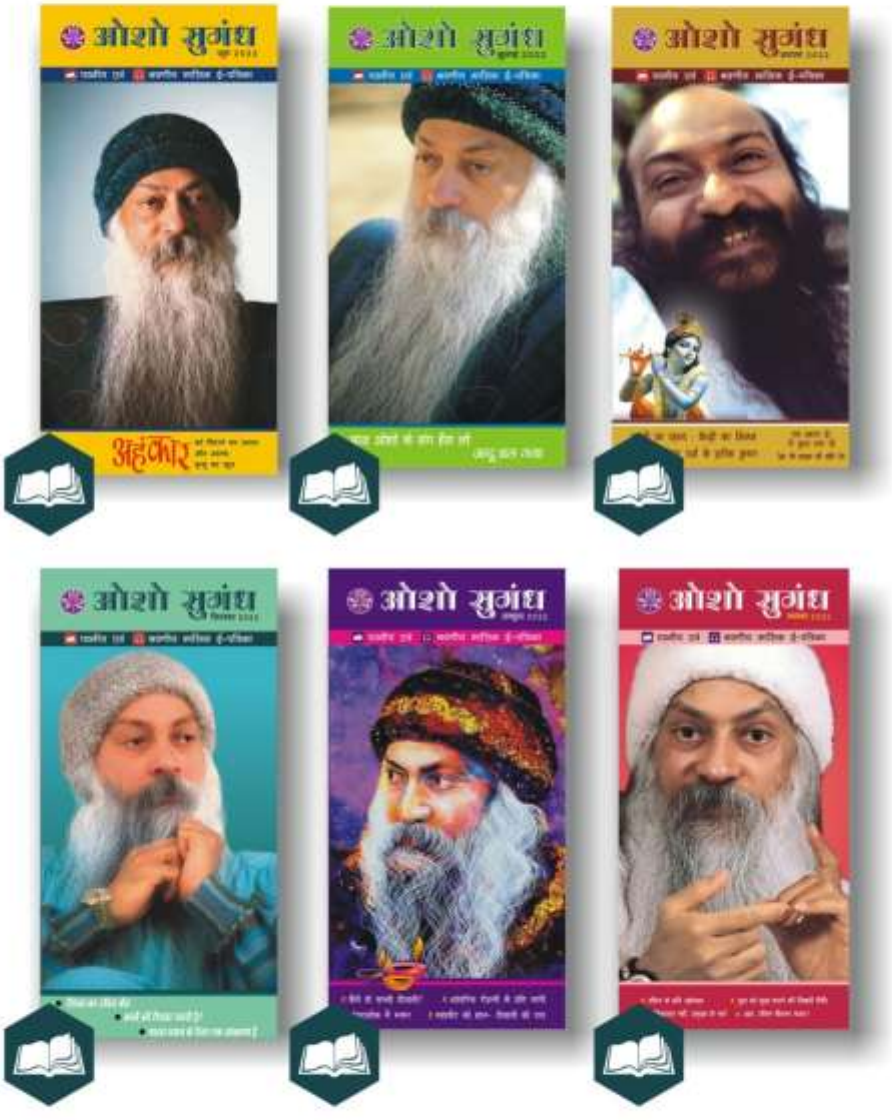

अभी तक के सभी अंकों के लिए चिह्न को दबाकर उन्हें देख सकते हैं।

क्या आप ओशो सुगंधा नियमित प्राप्त करना चाहते हैं

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दिए गए चिह्न को
स्पर्श करने से आपका संदेश
हम तक पहुँच जाएगा
और पत्रिकाएं नियमित रूप से
आप तक भेजने के लिए
आप का मोबाइल न.
पंजीकृत हो जाएगा।

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

ओशो फ्रैगरेन्स की हिन्दी-साहित्य लिंक

सांस से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 1 में 1-28 विधियां

श्रवण से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 2 में 29-56 विधियां

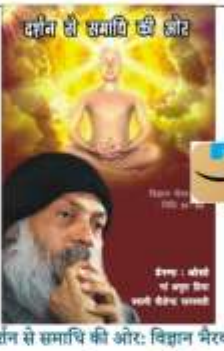

दर्शन से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 3 में 57-84 विधियां

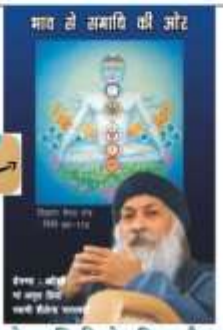

भाव से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 4 में 85-112 विधियां

हास्य-फुलझड़ियां: मुल्ला नसरुद्दीन के प्रेरणादायी लतीफे

जीवन - हंसने-हंसाने का अवसर (Hindi Edition)

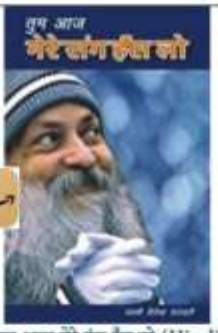

तुम आज मेरे संग हँस लो (Hindi Edition)

एक कप चाय: ओशो-दृष्टि से ओत-प्रोत प्रेरक कथाएं

मा प्रेम के राही: बाउल फ़कीरों के संग तीर्थ यात्रा - मा अमृत प्रिया

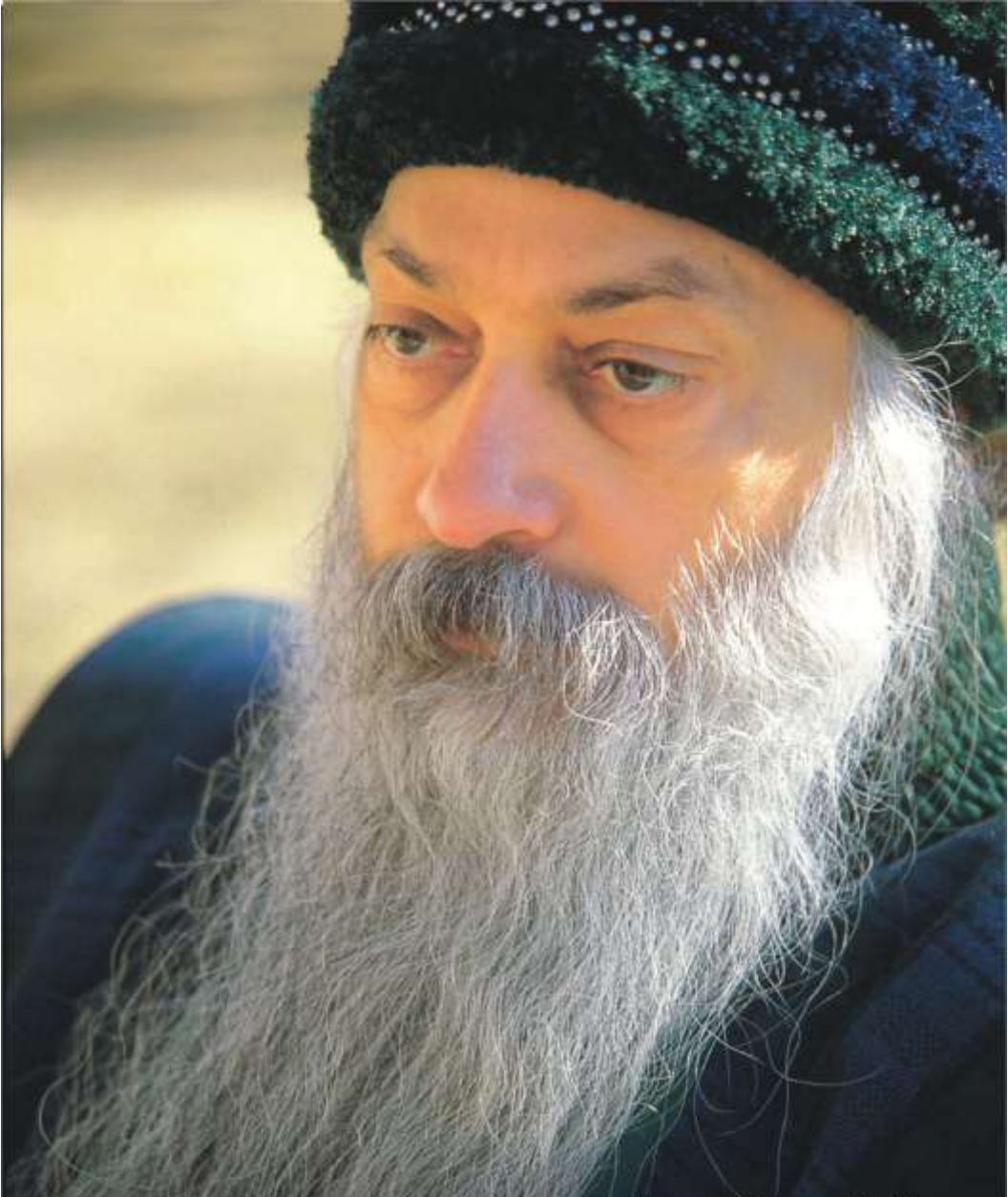

Many people come to me and say, "In the camp it is wonderful but when we go back it is lost." Even back home remember the group, visualize the group, feel the group, and the group will be there. At least I will be there.

And if you are a sannyasin, then just take the locket in your hand and exhale deeply three times. Do not inhale. Exhale deeply and allow the body to inhale: you do not inhale. Just exhale three times, remember me, and start -- and I will be there.

Space and time do not really matter. If your intensity is such that you can feel me, I will be there. The space disappears, time disappears, and ninety percent of you will be capable of doing the same as you are doing here. And it is good to do it alone. It is good to start in a group but it is not good to become dependent on the group forever.

- The Supreme Doctorine (Kenopanishad) -17